

संस्कृत-विद्यापीठ-द्वारा



20 NOV 2013
अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

17 JUL 2020

15 MAY 2007

11 JAN 1994

श्रीयुत नागेश वासुदेव गुणाजी,
बी. ए., एलएल. बी.



म नो रं ज क ग्रंथ प्र सार क मंडळी,
गिरगांव मुंबई.

15 MAR 1990

0202



मनोरंजक ग्रंथप्रसारक मंडळीचीं पुस्तके.

<p>१ लें, धाकट्या सूनवाई. ०-८-०</p> <p>२ रें, संसारांतल्या गोष्टी. ०-६-०</p> <p>३ रें, गुणसुंदरी.*</p> <p>४ थें, नवयुग. ०-१२-०</p> <p>५ वें, सरस्वती. ०-१०-०</p> <p>६ वें, द्रोणसंकोप. ०-६-०</p> <p>७ वें, भोळा बाळू. ०-८-०</p> <p>८ वें, सुंदरमाधव. ०-१०-०</p> <p>९ वें, राववहादुर पर्वत्या. ०-६-०</p> <p>१० वें, कुसुमगुच्छ. ०-४-०</p> <p>११ वें, मृणालिनी. ०-८-०</p> <p>१२ वें, दुःखाअंती सुख. १-४-०</p> <p>१३ वें, माणिकबाग. १-४-०</p> <p>१४ वें, चतुर विनोदी स्त्रिया. ०-६-०</p> <p>१५ वें, राजा तोडरमल. ०-१२-०</p> <p>१६ वें, प्रियंवदा. ०-८-०</p> <p>१७ वें, संसाररंजन. १-०-०</p> <p>१८ वें, वंगजागृति.*</p> <p>१९ वें, श्रीकृष्णचरित्र.*</p> <p>२० वें, भयंकर ग्रहदशा. ०-६-०</p> <p>२१ वें, संशयी जिजाबाई.*</p> <p>२२ वें, सुधारणेचा मध्यकाल.*</p> <p>२३ वें, मुद्राराक्षस. ०-८-०</p> <p>२४ वें, मालतीमाधव. ०-८-०</p> <p>२५ वें, उपदेशपाठ. ०-६-०</p> <p>२६ वें, परिणामी हेंच. ०-८-०</p> <p>२७ वें, मूर्तिमंत देशाभिमान. ०-८-०</p> <p>२८ वें, ऐतिहासिक स्त्रिया. ०-८-०</p>	<p>२९ वें, प्रेमकहाणी. ०-४-०</p> <p>३० वें, वेड्यांचें इस्पितळ. ०-३-०</p> <p>३१ वें, नवकुसुममाला.*</p> <p>३२ वें, दोनघटका मनोरंजन. १-४-०</p> <p>३३ वें, रामाची अयोध्या. १-०-०</p> <p>३४ वें, गौप्यगोपन. ०-८-०</p> <p>३५ वें, भयंकर सूड. ०-४-०</p> <p>३६ वें, नीलांबरी. ०-३-०</p> <p>३७ वें, संप्रामसिंह. ०-८-०</p> <p>३८ वें, जीवनसंध्या. ०-१२-०</p> <p>३९ वें, अमृतपुलिन. ०-६-०</p> <p>४० वें, दोनघटका मनोरंजन. १-४-०</p> <p>४१ वें, सुशिक्षित स्त्री. ०-१०-०</p> <p>४२ वें, लीला. ०-१२-०</p> <p>४३ वें, मुरारराव. ०-४-०</p> <p>४४ वें, रमामाधव. ०-४-०</p> <p>४५ वें, नशिवाची परीक्षा. १-४-०</p> <p>४६ वें, विवेकानंदांचीं पत्रें. ०-४-०</p> <p>४७ वें, प्रेमविजय.*</p> <p>४८ वें, भद्रंभद्र. ०-१०-०</p> <p>४९ वें, काव्यकुंज.*</p> <p>५० वें, रामतीर्थ भाग १ ला. १-४-०</p> <p>५१ वें, प्रणयानंद.*</p> <p>५२ वें, आमच्या आठवणी. १-४-०</p> <p>५३ वें, सुदाम्याचे पोहे. ०-१२-०</p> <p>५४ वें, पन्हाळगडचा किल्लेदार. ०-४-०</p> <p>५५ वें, नरेंद्रनाथ. १-०-०</p> <p>५६ वें, सुधा. १-०-०</p>
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

* ह्यो पुस्तके संपली आहेत. विकत मिळणार नाहीत.

मनोरंजक ग्रंथप्रसारक मंडळीची पुस्तकमाला.

पुस्तक ७२ वें.

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

लेखक

श्रीयुत नागेश वासुदेव गुणाजी,

बी. ए., एल्एल्. बी.

बेळगाव.

[प्रथमावृत्ति]

मनोरंजक ग्रंथप्रसारक मंडळी,

गिरगांव-मुंबई.

किंमत ०--४--०.]

सर्व हक्क स्वाधीन.

[सन १९१४.]

Printed & Published by Kashinath Raghunath Mitra,
at the Manoranjan Printing Press, 1, Charni Rd., Girgaon—Bombay.

गरीब हिंदी विद्यार्थीनां
सप्रेम अर्पण.



“जेथें उद्योगाची अप्रतिष्ठा होते, तेथें अवनति आणि नाश हीं ठेविलेलींच ! आणि कलासुद्धा एकप्रकारचें जोखड काम होऊन बसते. पण जेथें उद्योगाची मानमान्यता होते, तेथें जीवंतपणा (चैतन्य) आणि ज्ञान वास करितात व कौशल्य वाढतें.

“माझ्या गरीब विद्याच्या धनिकांनों ! उंचउंच संगमरवरी देवालये आणि देवांच्या संगमरवरी दगडांच्या मूर्ति उभारल्यानें तुमच्या अंतःकरणाची तळमळ शमणार नाही. तुझाला दुःख होत आहे हें मला पकें माहीत आहे. मानीपणामुळें तुझीं हें कदाचित् कबूल करणार नाही. देशांतील उपासमार काळ्याच्या नारायणांची, व काबाडकष्ट करणाऱ्या विष्णूंची पूजा करा ! गरीब हिंदी विद्यार्थ्यांना उपयुक्त धंदे शिकण्याकरितां अमेरिकेस पाठवा, ह्यणजे ते शिकून हिंदुस्तानांत परत आल्यावर लोकांना आपल्या पायावर उभें राहण्यास शिकवितील, आणि तेणेंकरून शेंकडों, नव्हे हजारां उपाशी लोकांचे प्राण वांचतील.”

—स्वामी रामतीर्थ.

भिक्षापात्र अवलंबणें । जळो जिणें लाजिरवाणें ॥

ऐसियासी नारायणें । उपेक्षीजे सर्वथा ॥

—तुकाराम.



अनुक्रमणिका.

प्रस्तावना.	७
भूमिका.	९
प्र. १ लें, वर्तमानपत्रें विकणारा सहा वर्षांचा बालक.	१३
प्र. २ रें, डोरान.	१७
प्र. ३ रें, व्यावहारिकधर्माची दीक्षा.	२०
प्र. ४ थें, अमेरिकेंतील शिक्षणाच्या सोयी.	२३
प्र. ५ वें, विद्यार्थ्यांचे परिश्रम.	२६
प्र. ६ वें, विद्यार्थ्यांची सहल.	३५
प्र. ७ वें, स्वावलंबी विद्यार्थी.	३६
प्र. ८ वें, चिनी व जपानी विद्यार्थी.	४१
प्र. ९ वें, स्वावलंबनाचे गुण.	४२

15 MAR 1990

मनोरंजक ग्रंथप्रसारक मंडळीने प्रसिद्ध केलेलीं
श्रीयुत ना. वा. गुणाजी, बी. ए., एलएल. बी.,
यांनी लिहिलेलीं दुसरीं पुस्तकें.

- १ स्वामी रामतीर्थ—भाग १ ला.
(जीवनचरित्र, २२ लेख, व्याख्यानें वगैरे). १-४-०
- २ स्वामी रामतीर्थ—भाग २ रा.
(प्रस्तावना, २६ व्याख्यानें). १-४-०
- ३ स्वामी रामतीर्थ—भाग ३ रा. (छापत आहे). १-४-०
- ४ श्रीरामकृष्ण (बोधामृत).
(परमहंसाचें जीवनचरित्र व बोधामृताचे
१४ परिच्छेद वगैरे). १-४-०
- ५ श्रीरामकृष्णाचीं बोधवचनें (समग्र संख्या ६४२). ०-८-०
- ६ आत्मोद्धार.
(डॉ. बुकर टी. वॉशिंग्टनचें आत्मचरित्र). १-०-०

किंमतीशिवाय ट. ख. निराळा पडेल.

हीं सर्व पुस्तकें ग्रंथकर्त्यांकडे (समादेवी लेन, वेळगांव),
किंवा खालील पत्त्यावर मिळूं शकतील.

मनोरंजक ग्रंथप्रसारक मंडळी, गिरगांव—मुंबई.



स्वामी श्रीसत्यदेव.

कण्ठ्या पुस्तके जपूत वापस!

ग २

प्रस्तावना = 2 SEP 1996

है पुस्तक श्रीयुत 'सत्यदेव' यांनीं सुरू केलेल्या सत्यग्रंथमालेतील 'अमेरिकाके निर्धन विद्यार्थियोंके परिश्रम' या महत्त्वाच्या पुस्तकाचे भाषांतर आहे. सत्यग्रंथमालेची महाराष्ट्रवाचकांनां ओळख होऊन ती ग्रंथमाला मूळ हिंदींतून वाचण्याविषयीं उत्सुकता वाढावी, लोकांनां -विशेषतः तरुण पिढीला श्रमाची महती समजावी व श्रमाची गोडी लागावी, आणि हिंदी विद्यार्थ्यांनीं आपल्या पायावर उभें राहण्यास शिकावें, या हेतूंनीं हें भाषांतर केलें आहे.

सत्यग्रंथमालेचे कर्ते श्रीयुत सत्यदेव हे पंजाब प्रांतांत लुधियाना येथें सवत १९३७ या वर्षीं जन्मले. त्यांचे वडील सरकारी नोकर होते. त्यांचा पगार थोडा होता, पण कुटुंब मोठें होतें. सत्यदेवांनीं लाहोर येथील 'दयानंद आंग्लो-वेदिक हायस्कूल' त प्रथम अभ्यास केला. इ. स. १८९७ सालीं ते मॅट्रिक्युलेशन परीक्षा पास झाले. त्याच वर्षीं त्यांचें लग्न करावें झणून त्यांच्या वडिलांनीं अतोनात खटपट केली, पण सत्यदेवांनीं लग्न करून घेण्याचें साफ नाकारिलें. सत्यदेवांनां दुसऱ्याची नोकरी करणें या गोष्टीचाहि मुळापासून भारी तिटकारा असे; त्यांच्या वडिलांनीं अत्याग्रह करून त्यांनां नोकरी धरावयाला लाविलें. नाइलाजानें आणि नाखुशीनें त्यांनीं ती पतकारिली, तथापि सहा महिन्यांच्या आंतच ती सोडून देऊन ते स्वतंत्र झाले. नंतर संस्कृताचें अध्ययन करण्यासाठीं झणून ते काशीला गेले. त्यांची मातुःश्री आजारी पडल्यामुळें ते लाहोराला १८९९ सालीं परत आले, आणि दयानंद आंग्लो-वेदिक कॉलेजांत दाखल झाले. मातुःश्री निवर्तल्यावर १९०० सालीं त्यांनीं कॉलेज सोडिलें. नंतर चार वर्षे त्यांनीं काशीक्षेत्रांत संस्कृताचें अध्ययन केलें. काशीच्या हिंदु कॉलेजांतहि त्यांनीं थोडासा अभ्यास केला. स्वतःच्या खटपटीनेच त्यांनीं हें सर्व केलें. १९०४ सालीं त्यांनीं हिंदु कॉलेज सोडिलें व नंतर ते अमेरिकेंत बराच त्रास सोसून गेले. त्यांच्या प्रवासाची आणि अमेरिकेंतील

११ JAN 1996

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

निवासांची मनोरंजक हकीगत ' अमेरिकापथप्रदर्शक, ' ' अमेरिका-दिग्दर्शन, ' 'अमेरिकाभ्रमण' इत्यादि सत्यग्रंथमालेच्या पुस्तकांत आलेली आहे. जिज्ञासूंनी ती अवश्य वाचावी, अशी शिफारस करितों.

अमेरिकेंत शिकागो, अरेगान आणि वाशिंग्टन येथील विश्वविद्यालयांत अर्थशास्त्राचा—राजकीय शास्त्राचा (Political Science) त्यांनी चार वर्षे अभ्यास केला. नंतर त्यांनी अमेरिकेंत पायांनी बराच प्रवास केला. एकंदरीत साडेपांच वर्षे अमेरिकेंत राहून ते परत स्वदेशीं आले. इतक्या कष्टाने संपादलेले ज्ञान आणि अनुभव आपल्या देशवांधवांना मिळावा, ह्मणून १९११ साली त्यांनी सोप्या व जोरदार हिंदी भाषेंत सत्यग्रंथमाला लिहिण्यास सुरुवात केली, आणि आतांपर्यंत त्यांनी या मालेची सातआठ पुष्पे गुंफिली आहेत. नोकरी पतकरून इतरांप्रमाणे सुखाने आणि निश्चितपणे कालक्रमणा न करितां स्वतंत्र होऊन आणि अनेक हालआपेष्टा भोगून अशा प्रकारे ते जनसेवा आणि मातृभाषा-सेवा करीत आहेत. 'एक पंथ दो काज' असे त्यांचे काम चालले आहे. सांप्रत काळीं हिंदुस्तानांत एकराष्ट्रीय भाषा असणे फार अवश्य आहे, आणि हिंदी भाषा राष्ट्रीय भाषा होण्याला योग्य आहे. तेव्हां अशा वेळीं महाराष्ट्रवाचकांनी श्रीयुत सत्यदेवांची हिंदी सत्यग्रंथमाला वाचावी, आपले हिंदी भाषेचे ज्ञान वाढवावे, आणि घरबसल्या सत्यदेवांबरोबर अमेरिकेंत भ्रमण करून त्यांच्या ज्ञानाचे आणि अनुभवाचे वाटेकरी व्हावे, अशी आमची सर्वांना आग्रहाची विनंति आहे.

श्रीयुत सत्यदेव यांनी भाषांतर करण्याला परवानगी दिली, आणि आमच्या विनंतीवरून आपले चरित्र थोडक्यांत लिहून पाठविलें, याबद्दल आम्ही त्यांचे फार आभारी आहों. वाचकांना सत्यग्रंथमाला वाचण्याची जिज्ञासा झाली, त्यांना श्रमाची महती समजून त्याची गोडी लागली, तर आमचे श्रम सफल झाले असे समजून त्यांची अधिक सेवा करण्याला आम्ही तयार होऊं.

शेवटीं हे काम तडीला नेल्याबद्दल परमात्म्याचे स्मरण करून ही अल्प प्रस्तावना पुरी करितों.

बेळगांव
१९१४. }

ना. वा. गुणाजी.

भूमिका.

गेल्या कांहीं शतकांपासून भारतवर्षातील लोकांचा दुसऱ्या देशांतील लोकांशी असलेला स्वतंत्र संबंध तुटलेला आहे. जगांत जर कोणता उत्तम देश असेल तर तो आमचाच देश आहे, अशी येथील लोकांनी अज्ञानवश होऊन आपली समजूत करून घेतली. परदेशगमनाची चाल बंद पडल्यामुळे हिंदुस्तानांतील लोकांमध्ये एकदेशीय विचारांनी घर केलें, आणि जेव्हां साधारणपणें विद्याप्रचाराचा अभाव झाला, तेव्हां एकदेशीय आणि भाऊबंदकीचे, जातीपोटजातीचे स्वार्थी विचार देशांतील निरनिराळ्या भागांत पसरले. एका प्रांतांतील लोक दुसऱ्या प्रांतांतील लोकांना विदेशी समजू लागले. पंजाब, संयुक्तप्रांत, वहार, बंगाल, मध्यप्रांत, महाराष्ट्र, गुजरात, राजपुताना, मद्रास, इत्यादि प्रांत हे निरनिराळे देश बनले, आणि या प्रांतांत राहणारे लोक एकमेकांना भिन्नभिन्न जातींचे मानू लागले. याचा परिणाम असा झाला, कीं, जगांतील दुसऱ्या लोकांच्या इतिहासाची आह्मांला कांहीं माहिती मिळाली नाही, आमच्या देशाच्याबाहेर जगांत काय नवीन फेरफार झाले, त्याची वार्ताहि आह्मांला लागली नाही. यूरोपांत कोणत्या क्रांति आणि चळवळी झाल्या, तेथील निरनिराळ्या जातींच्या लोकांत आपसांत कसकशी युद्धे झालीं, त्यांत कोणाचा पराभव झाला आणि तो कां झाला, याचें आह्मांला कांहींच ज्ञान झालें नाही. जगांत जर कोणी श्रेष्ठ असतील तर ते आह्मांच, आहों, आमच्या देशासारखा सुधारलेला देश पृथ्वीच्या पाठीवर नाही, असेंच आमचे गुरु आह्मांला पढवीत राहिले. या आत्मश्लाघेच्या उप-देशानें आमची फार हानि झाली, आणि आमच्या लोक्यांत अहंमन्यतेचें भूत शिरून राहिलें.

आह्मांला कोणापासून कांहीं शिकावयाचें नाही, आम्ही सर्व कांहीं जाणतो, हा अहंमन्यतेचा रोग आमच्या देशांत फैलावला. या रोगानें

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

आमच्या सर्व शक्तींचा न्हास करण्यास सुरुवात केली. ज्याच्याविषयी आह्मांला मोठा अभिमान वाटत असे, त्या धर्माचा पाया ढिला पडला. बाह्य दिखाऊ अवडंबराला आह्मी धर्म मानू लागलो, आणि असत्य व निरुपयोगी गोष्टीविषयी आपसांत वादविवाद करून डोकेफोड करून घेण्यांतच विद्वत्ता आहे असें समजू लागलो. चार विद्वान् एके ठिकाणीं जमले, कीं, तेथें रिकाम्या काथ्याकूटाशिवाय दुसरें कामच होईनासें झालें!

प्रकृति ही आगमननिष्क्रमण—(येणें व जाणें किंवा उत्पत्ति व लय)—च्या सिद्धान्ताला मानते. जें घर बंद राहिल तेथील हवा खराब आणि रोगोत्पादक होते. जो एकाच जागीं उभा राहतो, तो कुजून सडून जातो. हिंदुस्तानांतील लोकांचें परदेशीं जाणें—येणें बंद पडल्यामुळें अर्थात्च त्यांचे विचार एकदेशीय झाले, व तसें झाल्यामुळें त्यांच्यांत सडण्याची क्रिया सुरू झाली, त्यांत किडे पडूं लागले. शेवटीं अशी पाळी आली, कीं, लोक पापाला पुण्य, आणि अधर्माला धर्म समजू लागले. असा प्रकार न होता, तर भीष्माच्या ब्रह्मचर्याची प्रशंसा करणारी भारतप्रजा बाल-विवाहाला धर्म्य कधींहि समजली नसती. 'एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म' अशी घोषणा करणारे येथील लोक आपल्या देशबांधवांशीं शत्रूप्रमाणें वागले नसते. शेंकडों वर्षांच्या एकदेशीपणानें आणि संकुचित वृत्तीनें आमच्या देशांत मोठमोठ्या भयंकर रोगांचा फैलाव झाला.

वाहेरच्या लोकांशीं आमचा संबंध असता, तर हिंदुस्तानची अशी दशा कधींहि झाली नसती! दुसऱ्या देशांची उन्नति व अवनति यांचा इतिहास आह्मांला समजला असता, तर कालगतीप्रमाणें आह्मीं आमची उन्नति करून घेतली असती, आणि आजची आमची हीन दशा आह्मीं पाहिली नसती. सद्यःस्थिति सुधारण्याचे प्रयत्न हल्लींहि आमच्या समाजांत क्वचित्च होतात; पण परोपदेशे पांडित्याची मात्र हवी तितकी रेलचेल आहे. 'सुंभ जळालें पण पीळ गेला नाही' अशी आमची स्थिति झाली आहे. हल्लीं हें जरूर आहे, कीं, आमच्या अहंमन्यतेच्या रोगाचा

नायनाट करून आपली वर्तमानस्थिति सुधारण्याला आह्मीं सज्ज झालें पाहिजे. प्राचीनकालीं आह्मी वडे होतो, श्रेष्ठ होतो, ऋषि होतो, धनवान् होतो, इत्यादि अनुवाद आमच्या रोगाला वाढविणारा आहे. 'आमच्या येथें सर्व कांहीं विद्या होत्या, आमचे पूर्वज सर्व प्रकारचे शोध जाणत होते,' असें गाणें गाऊन आपलें मन खूष करून घेणें हें मूर्खपणाचें लक्षण आहे. आमचा संबंध हल्लीं वर्तमानकाळाशीं आहे. आमची सांप्रतची स्थिति कशी सुधारेल, हाच विचार आह्मांला केला पाहिजे. वरून खालीं येण्यांत कांहीं मोठेपणा नाही. व्यर्थ अभिमान धरणें ह्मणजे आपलें तोंड आपण काळें करून घेण्यासारखें आहे. यूरोपांतील लोक प्रथम रानटी होते. त्या अवस्थेंतून निघून त्यांनीं आतां आपली सुधारणा करून घेतली आहे; ही गोष्ट खरोखर त्यांनां मोठी भूषणावह आहे. कारण वरून खालीं येणें हें सोपें आहे, पण खालून वर जाण्याला उद्योग, सहिष्णुता, धैर्य इत्यादि गुण लागतात. यूरोपांतील लोकांनीं वर चढण्यास काय प्रयत्न केले, अमेरिकेनें आपली उन्नति कशी करून घेतली, या सर्व गोष्टी आह्मीं समजून घेण्याची फार आवश्यकता आहे. पूर्वजांच्या कमाईवर अवलंबून न राहतां आह्मीं आतां स्वतः कांहीं मिळविण्यास शिकलें पाहिजे, आणि यूरोप व अमेरिका येथें ज्या गोष्टींनीं विद्या, कलाकौशल्य यांची वाढ झाली, त्या सर्व गोष्टी जाणण्याचा आह्मीं यत्न करणें उचित आहे. पाश्चात्य संस्कृतीच्या कारणमीमांसेचा आह्मीं अभ्यास करणें अगदीं जरूर आहे. कारण त्या संस्कृतीशीं आमचा हल्लीं निकट संबंध आहे. असें आह्मीं न करितां आपल्या गुरुपणाच्या शेखींतच चूर होऊन राहिलों, तर इतर कांहीं जातींप्रमाणेंच आमचीहि गति होईल. बुद्धि आणि बल यांमध्ये आह्मी कोणत्याहि जातींहून कमी नाही. पण आमच्यामध्ये न्यून इतकेंच आहे, कीं, त्यांचा योग्य उपयोग कसा करावा, हें आह्मी जाणत नाही. आह्मी सर्वांचे गुरु आहों, असें समजून आह्मी स्वस्थ बसलों आहों, आणि या घमेंडीनेच आमचें सर्वस्वीं नुकसान झालें आहे.

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

याकरितां आमच्या देशांतील लोकांच्या हितार्थ अमेरिकेसारख्या सुधारलेल्या देशांतील गरीब विद्यार्थ्यांची कांहीं माहिती सांगणें हें इष्ट आहे, असें आह्माला वाटलें. ही माहिती वाचून भिक्षावृत्तीनें राहणारे आमचे विद्यार्थी हिंदुस्तानची सांप्रतची स्थिति कां सुधारूं शकत नाहींत, आणि उलट ते देशाचें फार मोठें नुकसान कसें करीत आहेत, हें त्यांनां कळून येईल. आमच्या तरुण मंडळीनें श्रमाची महती जाणणें हें सांप्रत फार जरूरीचें आहे. कारण त्यापासून त्यांच्या अंगीं उद्योग, परिश्रम, व्यवसाय इत्यादि सद्गुणांची वाढ होणार आहे.

दुसऱ्या लोकांच्या सद्गुणांपासून आह्मी आपला फायदा करून घेण्यास शिकावें, आणि आपलें दौर्बल्य दूर करून देशांतील उद्योग व व्यवसाय वाढवावे, अशी आह्मी परमात्म्याची प्रार्थना करितों.

काशी, }
२६।१।१९१२. }

नम्र
सत्यदेव.

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

प्रकरण पहिलें.

वर्तमानपत्रें विकणारा सहा वर्षांचा बालक.

हिंदुस्तानांत सांप्रत शिक्षणप्रसाराविषयीं सर्वत्र ओरड चाललेली आहे. जिकडूनतिकडून असा स्पष्ट ध्वनि ऐकूं येतो, कीं, शिक्षणाचा प्रसार जोरानें झाल्याशिवाय आपल्या देशाचें कल्याण होणें शक्य नाही. अशा वेळीं, दुसऱ्या देशांतील शिक्षणपद्धतीची स्थिति कशी आहे हें समजणें, त्यांतहि विशेषतः अमेरिकेचे गरीब विद्यार्थी कसें विद्यार्जन करतात हें समजणें, फार जरूर आहे. कारण हिंदुस्तान हा एक गरीब देश आहे, व त्याकरितां अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थ्यांच्या स्थितीची माहिती या देशांतील लोकांनां फारच उपयुक्त होण्यासारखी आहे.

आमच्या देशांत पूर्वापार चालत आलेल्या रूढीप्रमाणें गरीब विद्यार्थी भिक्षा मागून शिकत असतात. काशीमध्ये हजारां विद्यार्थी एक वेळां अन्नछत्रांत भोजन करून अर्धपोटीं राहून संस्कृताचें अध्ययन करीत असतात. पण विद्याध्ययनानंतर देशाची सेवा करितां येईल अशी त्यांची शारीरिक स्थिति नसते, व मनाचीहि तयारी नसते. दुसऱ्यांवर अवलंबून राहणाऱ्या व भिक्षावृत्तीनें विद्यार्जन करणाऱ्या विद्यार्थ्यांच्या हातून देशाचें हित होण्याची कांहीं आशा आहे काय ? ज्यांनां स्वतःला साहाय्य करितां येत नाही, आपल्या पायांवर उभें राहण्याची ज्यांनां तकद नाही, स्वतःचीं कामें स्वतः कशीं करावीं हें ज्यांनां शिकविलें जात नाही, अशा दुर्बल लोकांकडून देशोन्नतीसारखें महत्कार्य सिद्धीला

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

जाईल अशी आशा करणें, ह्मणजे वाळूवर भिंत बांधण्यासारखें आहे. मनुष्याचें जीवित हें एक घोर युद्ध आहे. या जीवन युद्धांतील स्वतःच्या लढाया स्वतःच मारावयाला आहीं शिकलें पाहिजे. त्यापासून आमचें शारीरिक, मानसिक आणि आध्यात्मिक बल वाढतें. जे लोक आपल्या लढाया दुसऱ्यांकडून लढवितात, जे लोक आपलीं कामें दुसऱ्यांवर अवलंबून राहून करूं पहातात, ते लोक भीरू आणि मानसिक व्याधीनीं ग्रस्त होतात. आमच्या विद्यार्थ्यांनां स्वावलंबनाचा धडा शिकविला जात नाहीं. यामुळें आज आमचे सर्व लोक स्वतःच्या पायांवर उभे राहण्याला असमर्थ आहेत. आमच्या दैनिक गरजा भाग-विण्याचें बहुतेक सामान बाहेरून येतें. स्वतःचीं कामें करण्यासाठीं आह्मांला दुसऱ्यांच्या तोंडांकडे पहावें लागतें. आमच्यामध्ये कांहीं मनुष्यत्व राहिलें नाहीं. साधारण कामासाठीं आह्मांला दुसऱ्यांचीं आर्जेवें करावीं लागतात. आमच्या या दौर्बल्याचें कारण असें आहे, कीं, लोकांनां आरंभापासून स्वावलंबनाचा धडा शिकविलेला नसतो. कांहीं कठिण प्रसंग आमच्यावर आला, कीं, आह्मांला त्या वेळीं कांहीं एक सुचत नाहीं, आह्मी अगदीं भांबावून जातां.

गेल्या उन्हाळ्याच्या दिवसांत मी आपल्या एका मित्राला भेटण्यासाठीं बजनोर जिल्ह्यांतील रामपूर नांवाच्या गांवीं गेलों होतों. हत्तीवर बसून रामगंगेच्या किनाऱ्याच्या बाजूनें आह्मी फिरत गेलों. या वर्षी पाऊस चांगला पडला नव्हता. रामगंगेच्या किनाऱ्याची शेती वाळून गेली होती. नदींत पाणी पुष्कळ होतें, आणि गरीब बिचारे शेतकरी लहान लहान डोलांतून पाणी भरून आणून शेतांत शिंपीत होते. त्यांची ती दशा पाहून मला मोठी दया आली. अमेरिकेंत अशी अवस्था केव्हांहि दृष्टीला पडावयाची नाहीं. जवळ समोर एवढी मोठी नदी वहात असून किनाऱ्याची शेती वाळून जावी, ही किती आश्चर्याची गोष्ट आहे ! याचें कारण स्पष्ट आहे. आमच्या देशांतील लोक, स्वतःच्या बुद्धीचा उपयोग कसा करावा, हें शिकले नाहींत. कांहीं विकट प्रसंग

77 JAN 1994

आला, कीं, ते प्रारब्धावर भरंवसा ठेवून स्वस्थ राहतात. या देशांत इतके पहाड, नदीनाले असून येथील शेतकीची अशी निकृष्ट अवस्था असण्याचें कारण हेंच आहे. लोकांनां यंत्रांचा उपयोग माहीत नाही. अमेरिकेंत पंपाच्या साहाय्यानें एकदम हजारों विघे जमिनीला पाणी पुरविण्यांत येतें. तेथील लोक उद्यमशील, साहसी व स्वावलंबी आहेत. आमचे लोक त्यांच्या उलट आहेत. ते आपल्या बुद्धीचा उपयोग बिलकूल करीत नाहीत. वाडवडिलांपासून जें कांहीं चालत आलें आहे, त्याचप्रमाणें ह्मणजे त्यांच्या मळलेल्या वाटेनें आह्मी जात आहों. त्यांत सुधारणा करण्याचें नांवहि आह्मी काढीत नाहीं !

1 5 MAY 2007

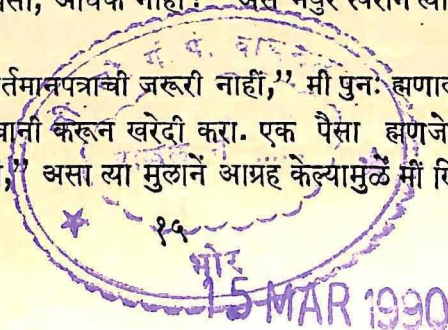
शाळांतील शिक्षकांनां हें चागलें माहीत आहे, कीं, जो विद्यार्थी आपले प्रश्न स्वतः सोडवीत नाही, उलट दुसऱ्यांची नक्कल काढितो, तो शेवटीं कुचकामाचा होतो ! त्याची बुद्धि वाढत नाही, त्याचा आचार सुधारत नाही, किंवा त्याच्यांत मनुष्यत्वहि येत नाही. भिक्षावृत्तीवर ज्याची सर्व भिस्त आहे, असें शिक्षण आह्मी आमच्या संततीला देत आहों. अमेरिकेंतील एका छोकऱ्याचें उदाहरण देऊन हें विधान मी अधिक स्पष्ट करितों. शिएटल गांवीं असतांना मी एकदां पोस्ट ऑफिसांत पत्रें आणण्याकरितां गेलों होतों. परत येतांना वाटेंत एक सहा वर्षांचा बालक वर्तमानपत्रें विकीत असलेला मी पाहिला. मी जेव्हां त्याच्याजवळून जाऊं लागलों, तेव्हां तो मला ह्मणाला “ मिस्टर, आपण हें वर्तमानपत्र विकत घ्याल का ? ”

“ नाही, मला वर्तमानपत्र नको, ” मीं हळूच उत्तर दिलें.

“ केवळ एक पैसा, अधिक नाही ! ” असें मधुर स्वरानें त्या मुलानें ह्मटलें.

“ नाही, मला वर्तमानपत्राची जरूरी नाही, ” मी पुनः ह्मणालों.

त्यावर “ मेहेरबानी करून खरेदी करा. एक पैसा ह्मणजे कांहीं अधिक रकम नाही, ” असा त्या मुलानें आग्रह केल्यामुळे मीं खिशांतून



अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

एक पैसा काढून वर्तमानपत्र विकत घेतलें, आणि त्याला विचारलें “मुला, तुझा बाप फार गरीब आहे का ?”

मुलगा फार विस्मित होऊन माझ्याकडे पाहून हणाला “आपण असें कां विचारतां ?”

“कारण तूं वर्तमानपत्रें विकत आहेस,” मी हणालों.

यावर तो बालक हणाला “काय वर्तमानपत्रें विकणारे लोक गरीब असतात ?”

मी हंसून हटलें “असें नाही. माझ्या विचारण्याचा आशय असा, कीं, तुझे इतकें लहान वय आहे, आणि तूं एवढांपासून वर्तमानपत्रें विकून पैसे मिळवावयाला लागला आहेस.”

फार कष्टी होऊन मुलानें माझ्याकडे पाहिलें आणि मोठ्या आवेशानें हटलें “अहो मिस्टर, माझा बाप गरीब नाही. पण बापाच्या आश्रयावर अवलंबून राहणें मला आवडत नाही. मीं अंगावर घातलेले कपडे स्वतःच्या मेहनतीनें खरेदी केले आहेत, आणि मला लागणारा सर्व खर्च मी स्वतः उद्योग करून मिळवितों. व्यांकेंत माझे पन्नास डालर जमा आहेत.”

त्या बालकाच्या या शब्दांचा माझ्या मनावर फारच परिणाम झाला ! मीं आपल्याशींच विचार केला, कीं, पहा, अमेरिकेचा सहा वर्षांचा बालक स्वतंत्र बाण्यानें आपलें जीवित घालवितो, त्याला कशाचीहि पर्वा वाटत नाही ! आपण मनुष्य आहों, परमात्म्यानें आपणाला हातपाय दिले आहेत, आणि त्यांचा उपयोग कसा करावा, हें तो जाणतो. अमेरिकेप्रमाणें आमचाहि एक देश आहे, पण त्या देशांत सहा वर्षांच्या मुलाला आपलें तोंड धुण्याची व शेंबूड काढण्याचीहि अक्कल नसते ! सहा वर्षांचे बालक असोत, किंवा शाळा व कॉलेजेजें यांमधून शिकणारे आमचे प्रौढ विद्यार्थी असोत, ते सर्व आपल्या आईबापांवर अगर आत्तेष्टांवर अवलंबून राहून विद्याभ्यास करितात. एकाद्या महिन्यांत

डोरान.

त्यांना खर्चाला मिळाले नाही, की, त्यांचे लिहिणेवाचणे, त्यांचा अभ्यास सर्व बंद होतो! आईवापांना मुलांना शिक्षण देण्याचे सामर्थ्य नसले, की, तीं अशिक्षित राहतात. अधिकांत अधिक कोणीं कांहीं केले तर ते हेंच, की, तो भिक्षा मागून शिकतो. याचा परिणाम असा होतो, की, त्यांना आपल्या आयुष्यांत जीवनसंग्रामाची तयारी करावयाची संधि मिळत नाही, त्यांचा स्वतःवर विश्वास नसतो, आपल्या हातून कांहीं कर्तव्यगारी होईल असे त्यांना वाटत नसते. कारण आपलीं कामे स्वतः करण्याची रीत किंवा सवयच ते लावून घेत नाहीत.

—
प्रकरण दुसरें.

डोरान.

जेव्हां मी शिकागो विश्वविद्यालयांत शिकत होतो, तेव्हां तेथे डोरान नांवाचा एक मुलगा शिकण्यासाठीं आला. त्याच्यापार्शीं फक्त बारा आण्यांचे पैसे होते. शिकागो हें शहर असे आहे, की, तेथे पावलो-पावलीं खर्च करण्याला रुपया हवा. एक डबल रोटीला अडीच आणे पडतात. आठ आण्यांशिवाय हजामत होत नाही. केंस कापून ध्याव-याचे असतील तर दीड रुपयाहून कमी रकमेनें भागत नाही. अशा शहरांत फक्त बारा आण्यांचे पैसे घेऊन विद्याभ्यास करण्यासाठीं तो मुलगा आला. अमेरिकेच्या विश्वविद्यालयामध्ये नोकरी किंवा काम देण्याचे एक खाते असते. त्याला इंग्रजींत Employment Bureau असें म्हणतात. डोराननें तेथे जाऊन चौकशी केली. त्या खात्याच्या अध्यक्षांनें डोरानला विचारलें “खाणावळींत भांडीं साफ करण्याचें काम तूं करशील काय ?”

डोरान चलाख तरतरीत मुलगा होता. त्यानें लगेच उत्तर दिलें, की, “मी हरएक प्रकारचें, सांगाल तसलें काम करण्याला तयार आहे.”

* १ डालर=तीन रुपये दोन आणे.

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

अध्यक्ष फार खूप झाला आणि त्याने डोरानची पाट थोपटली. त्या दिवसापासून दरमहा साठ रुपये आणि जेवण या वेतनावर डोरान खाणा-वळींत भांडीं साफ करण्याचें काम करूं लागला. चार वर्षे तो वीर बालक शिकागो विश्वविद्यालयांत राहिला. घराहून त्यानें एक पैसाहि मागविला नाहीं. आपल्या हातानें मजुरी करून व नानाप्रकारचे कष्ट सोसून त्यानें आपला विद्याभ्यास पुरा केला, आणि बी. ए. ची पदवी मिळवून तो आपल्या घरीं गेला.

हा मुलगा आणि आमच्या इकडील तरुण मुलगे, यांमध्ये किती अंतर आहे, हें विचार करण्यासारखें आहे. चार वर्षांच्या परिश्रमानें डोरान मनुष्य ह्मणजे मर्द बनला. आपला निर्वाह आपल्या हिंमतीवर कसा करावा, हें त्याला पूर्णपणें समजलें. मेहनतीनें व मजुरीनें त्याचे हातपाय मजबूत व शरीर पुष्ट आणि सुंदर बनलें. स्वावलंबी वाण्यानें वागणारा तो तरुण संसारांतील कठिण प्रसंगांविषयीं बेपर्वा झाला. कसल्याहि संकटाचें त्याला भय वाटेनासें झालें. कसलेल्या मल्लाप्रमाणें तो सर्व प्रकारच्या दुःखांशीं झुंजण्याला तयार झाला. आमचे तरुण मुलगे शाळांतून व कॉलेजांतून शिकून बाहेर पडले, तरी त्यांनां आपल्या आईबापांनां शरण जावें लागतें, व त्यांच्यावर अवलंबून रहावें लागतें. त्यांनां स्वतः आपला निर्वाह करितां येत नाहीं. नोकरीसाठीं ते इकडे-तिकडे आपले जोडे झिजवीत फिरत असतात. केव्हां कोणाची खुशामत कर, केव्हां कोणाचें आर्जव कर, केव्हां कोणाचा अत्यंत आज्ञा-धारक नोकर बन, अशा रीतीनें ते नोकरीचा शोध करीत असतात. इतकेंहि करून बहुतेकांचे प्रयत्न सफल होत नाहींत. प्रथम कॉलेजांत शिकतांना आपल्या आईबापांच्या डोक्यावर ऋणाचें ओझे लादून ते विद्याभ्यास करतात. शिकून बाहेर पडल्यावर त्यांनां आपला निर्वाह स्वतंत्रपणें करितां येत नाहीं. त्यांचें शरीर दुर्बल, नेत्र कमकुवत आणि अंगें व्याधिग्रस्त असतात. आमच्या देशाच्या आणि अमेरिकेच्या तरुण मंडळींत किती फरक आहे !

शिकागोला मी १९०६ जूनमध्ये जाऊन पोहोचलो, तेव्हां माझ्याशी दीडशें रुपये होते. तेथे गेल्यावर मी लगेच विश्वविद्यालयांत दाखल होऊन अभ्यास सुरू केला. शिकागो विश्वविद्यालयांत कार्टर सिस्टिमची-तिमाहीची पद्धत आहे. प्रत्येक तीन महिन्यांनीं टाइम-टेबल (वेळापत्रक) बदलत असते. तीन महिन्यांपुरती माझ्यापाशीं खर्चाची रकम होती. त्यामुळे बेफिकीर होऊन मी आपल्या कामाला लागलों. विश्वविद्यालयाची फी सालिना साडेचारशें रुपये आहे. पण विश्वविद्यालयाच्या प्रेसिडेंटनीं मेहेरबानीनें माझी फी माफ केली. दीडशें रुपयांनीं मी माझे काम सुरू केले खरे, पण ही रकम संपल्यावर माझा निर्वाह कसा चालेल, याविषयीं मी कांहींच विचार केला नाही. माझे संस्कार हिंदी असल्यामुळे मी नशीवाच्या भरवंशावर राहिलों. मनांत ह्मटले कीं, हे रुपये संपतांच कोणत्या ना कोणत्यातरी रीतीनें ईश्वर कार्यासिद्धि करवील. याप्रमाणें मी कांहीं उद्योग न करितां स्वस्थ राहिलों. तीन महिने होत आले, आणि रुपयेहि संपत चालले, तेव्हां मात्र मला मोठी काळजी लागली. इकडेतिकडे फिरून मी लोकांपाशीं नोकरीचा शोध करूं लागलों, पण कांहींच जुळेना. एके दिवशीं माझ्या एका मित्रानें, नोकरी देवविणाऱ्या खात्याच्या कचेरींत जाऊन चौकशी करण्याचा मला सल्ला दिला. त्याच्या सांगण्यावरून मी तेथील अध्यक्षकडे गेलों. मला पाहून अध्यक्ष ह्मणाले “काय, आपण खाणावळींत भांडीं धुण्याचें काम कराल काय ?”

हे शब्द माझ्या कानांवर वज्रासारखे पडले ! मी आपलें डोकें खाजवून मनांत विचार करूं लागलों, कीं, माझ्या वंशांत कोणींहि असें काम केले नाही. मी उत्तर न देतां विचार करीत राहिलों आहे, असें पाहून अध्यक्ष हंसत ह्मणाला “ आपल्या देशांत भांडीं धुणाऱ्या लोकांचा वर्ण निराळा आहे ? ”

“ होय महाराज, ” मीं धीरानें उत्तर दिलें.

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

“ आपण आतां अमेरिकेंत सर्व प्रकारच्या मजुरीवर—कामावर प्रेम करण्यास शिकलें पाहिजे !”

मी कांहींच प्रत्युत्तर न देतां तसाच आपल्या खोर्लींत परत आलों. त्यावर दोन दिवस लोटले, कोणीहि माझी वासपुस केली नाहीं. माझ्या पोटांत कावळे ओरडावयाला लागले, तेव्हां मी पुनः त्या अध्यक्षाकडे गेलों. मला पाहून तो किंचित् हंसला. मी पुनः जेव्हां नोकरीविषयीं विचारलें, तेव्हां त्यानें मोठ्या प्रेमानें मजुरीची महती मला समजावून सांगितली आणि खाणावळींत काम करण्यासाठीं मला पाठवून दिलें.



प्रकरण तिसरें.

व्यावहारिक धर्माची दीक्षा.

श्यांकाळची वेळ. लोक खाणावळींत येतजात होते. खाणावळीची मालकीण सर्व कामावर स्वतः देखरेख करीत होती. स्वयंपाकघराच्या समीप असलेल्या खोर्लींत एक लहानसा हौद होता. त्यांत एक थंड पाण्याचा व दुसरा गरम पाण्याचा असे दोन नळ लाविलेले होते. त्यांच्याजवळच एक उंच जागा भांडीं धुण्याकरितां केलेली होती. तेथें उभा राहून मी भांडीं धूत होतो. नोकर लोक भांडीं आणून त्या जागेवर ठेवीत. एका थोरल्या भांड्यांत साब्रण व गरम पाणी घातलेलें होतें. त्यांत मीं सर्व भांडीं घालून आणि तीं धुऊन बाहेर ठेवलीं. जवळच एक गरम पाण्यानें भरलेलें दुसरें भांडें होतें. त्यांत पुनः तीं भांडीं विसळून साफ करून कपड्यानें पुसून मी तीं एका कपाटांत ठेवीत असें.

तो संध्याकाळ मी केव्हांहि विसरणार नाहीं ! त्या दिवशीं मीं व्यावहारिक धर्माच्या शाळेंत प्रवेश केला. माझे डोळे उघडले. उगीच धर्म—धर्म ह्याणून ओरडल्यानें कोणीहि धार्मिक होत नाहीं. धर्माचा संबंध मनुष्यांच्या व्यवहाराशीं व जीविताशीं आहे, हें मला कळूं लागलें. मजुरी कोणत्याहि प्रकारची कां असेना, ती जर इमानें इतबारें केली,

व्यावहारिक धर्माची दीक्षा.

तर ती करणारा नीच होत नाही. जे लोक दुसऱ्यांनी मिळविलेलं धन उडवून टाकतात आणि स्वतःला उच्च वर्णाचे समजतात, ते लोक खरोखर नीच होत ! भांडीं घांसणाऱ्या मजुराला जे निंद्य समजतात, ते लोक निर्लेज्ज होत. काम किंवा मजूरी कोणत्याहि मनुष्याला नीच करीत नाही. ज्याचें अंतःकरण मलीन आहे, ज्याला आपण मोठे आहो अशी घमंड आहे, जो ईश्वराच्या लेकरांना अस्पर्श समजतो, तो नीच होय.

मी तो संध्याकाळ कधीहि विसरणार नाही ! त्या संध्याकाळीं मी मजुरीची महती समजलों. माझ्या अंगी असलेला उच्च वर्णाचा खोटा अभिमान मी सोडून दिला. माझ्या देशाच्या मजूर लोकांवर मी प्रेम करूं लागलों, आणि त्यांच्या कल्याणासाठीं मी यथाशक्ति प्रयत्न करीन, अशी मी प्रभुसमोर प्रतिज्ञा केली.

चारपांच दिवसांनंतर माझ्या एका अध्यापकानें मला पुस्तकालयांत काम दिलें. कपाटांतून पुस्तकें बाहेर काढावीं, त्यांवरील धुरळा झाडून टाकावा, फडक्यानें तीं पुसून पुनः कपाटांत ठेवावीं, असें काम मला करावें लागलें. याबद्दल मला मजुरी रोज साडेसात रुपये मिळत होते. मीं हें काम दहा दिवस केलें, आणि त्यानंतर माझा निर्वाह चांगला चालूं लागला.

येथें हें लक्ष्यांत ठेविलें पाहिजे, कीं, मीं जर पहिलें काम केलें नसतें, तर अध्यापकानें मला दुसरें काम कधीहि दिलें नसतें ! अमेरिकेंतील लोक मजुरीचें महत्त्व जाणतात. मजुरीला जो निंद्य समजतो, तो मोठा पापी, पतित आहे, असें ते समजतात. त्यांची ही समजूत सत्य आहे. कारण जें कांहीं धन पैदा होतें, तें सर्व मजुरीपासूनच होतें. ज्या देशांत मजुरीला निंद्य मानतात, तेथील लोक व्यवसायी, उद्योगी किंवा साहसी होत नाहीत. अमेरिकेच्या उन्नतीचें एक मुख्य कारण असें आहे, कीं, त्या देशांत मजुरीला कमी मानीत नाहीत. ईश्वरानें काम करण्यासाठीं हात दिलेले आहेत. काम केल्यानें ते झिजत नाहीत. इतकेंच नव्हे,

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

तर उलट ते मजबूत आणि डौलदार होतात. आमच्या देशांत मजुरांना निघ मानण्यांत येते, हेंच आमच्या देशाच्या अवनतीचें कारण आहे.

अमेरिकेंत विश्वविद्यालयांत शिकणारे विद्यार्थी नाना प्रकारचीं कामें करून धन मिळवितात. हे विद्यार्थी बहुतेकरून घरें गरम राखण्याचें काम करितात. अमेरिका हा थंड देश आहे. हिवाळ्याच्या दिवसांत तेथें पुष्कळ बर्फ पडते. इमारतींच्या, घरांच्या तळघरांत मोठमोठ्या भट्ट्या पेटविलेल्या असतात, आणि त्यायोगें घरें गरम ठेविलीं जातात. एकदां मलाहि हें काम करावें लागलें. घराखालील तळघरांत एक भली थोरली भट्टी असते. तींत कोळसा जळत असतो. सकाळीं पांच वाजल्यापासून भट्टींत आग पेटविली जाते. भट्टींत मोठमोठे नळ असतात, आणि त्यांचा संबंध घरांतील सर्व खोल्यांशीं असतो. हवा खेळण्याकरितां एक मोठें छिद्र असते. बाहेरची थंड हवा भट्टींत जाते, तेथें ती गरम होऊन नळांच्या द्वारे सर्व खोल्यांत पोहोचते, आणि सर्व खोल्यांना सारखी उष्णता देते. बाहेर किती का बर्फ पडेना, खोलींत कपडे काढून मनुष्य बसूं शकतो. दोनतीन तास काम करून विद्यार्थी आपल्या भोजनाचा व राहण्याचा खर्च काढतात. कांहीं घरेंहि त्यांना झाडलोट करून साफ करावीं लागतात.

यांशिवाय दुसरींहि पुष्कळ कामें विद्यार्थी करीत असतात. पुष्कळ विद्यार्थी दर शनिवारीं मोठमोठ्या दुकानांत गुमास्याचें काम करितात. शनिवारीं दुकानांत मोठी गर्दी असते. त्या दिवशीं मजूर लोकांना पगार वाटण्यांत येतो. दुकानदारांना काम करणाऱ्या लोकांची जरूरी असते. एक दिवस काम करून विद्यार्थी नऊदहा रुपये मिळवितात. याप्रमाणें ते महिन्यांत चार शनिवारीं काम करितात. कांहीं विद्यार्थी रेल्वे कंपन्यांत काम करितात. बरेच विद्यार्थी जाहिराती व नोटिसा वांटून घेणें मिळवितात. कल्पना करा, कीं, एकानें कपड्यांचें नवीन दुकान उघडलें आहे, आणि त्याला आपल्या जाहिराती वांटावयाच्या आहेत;

अमेरिकेंतील शिक्षणाच्या सोयी.

तर दिवसाला सहा रुपये घेऊन विद्यार्थी शनिवारी व रविवारीं सवड काढून तें काम करितात. जाहिराती घेऊन ते घोघर हिंडतात, आणि प्रत्येक घराच्या टपालाच्या पेटींत एकेक जाहिरात घालतात. याप्रमाणें नव्या दुकानाची बातमी सर्व लोकांनां दिली जाते. कांहीं विद्यार्थी कचेऱ्यांत कारकुनांचीं कामें करतात. तेथें चारपांच तास काम करून ते महिना पंचवीसतीस डालर सहज मिळवितात. कांहीं विद्यार्थी टाइपरायटिंगचें यंत्र खरेदी करून त्यावर काम करून पैसे मिळवितात. याप्रमाणें लहानमोठीं कांहीं कामें करून विश्वविद्यालयांतील विद्यार्थी आपल्या निर्वाहापुरते खर्चाचे पैसे मिळवून आपला विद्याभ्यास करितात.

—•—
प्रकरण चवथें.

अमेरिकेंतील शिक्षणाच्या सोयी.

अफातां अमेरिकेंत शिक्षणाविषयीं कोणकोणत्या सोयी आहेत हें सांगणें अवश्य आहे. प्रत्येक संस्थानच्या सरकारामार्फत एक मोठें विश्वविद्यालय आणि एक कृषिविद्यालय उघडलेलें आहे. कांहीं संस्थानांमध्ये एकाहून अधिक विश्वविद्यालये आहेत, आणि तेथें विद्यार्थी साहित्य, भौतिकशास्त्रें, शिल्पशास्त्र इत्यादि विषयांचें अध्ययन करितात. या विश्वविद्यालयांत फार थोडी फी घेण्यांत येते. पण सर्वांत उच्च प्रतीचें शिक्षण विद्यार्थ्यांनां येथें मिळतें. एकएक विद्यालयांत लाखों रुपये खर्च करून शिक्षणविषयक सर्व सामानांचा संग्रह केलेला आहे. संस्थानच्या विश्वविद्यालयांमध्ये कालाचे विभाग सहामाहीच्या पद्धतीप्रमाणें असतात.

विश्वविद्यालयाचें वर्ष सप्टेंबरमध्ये सुरू होतें. आणि जानेवारीच्या शेवटीं अर्ध्या वर्षाचें शिक्षण पुरें होतें. विद्यार्थ्यांनां जे जे विषय शिकावयाचे असतील, ते ते विषय त्यांनां आपापल्या रुचीप्रमाणें शिकतां येतात. अर्ध्या वर्षानंतर विश्वविद्यालय सोडावयाचें असेल, तर तसें करण्यास त्यांनां प्रतिबंध नसतो. कारण बहुतेक विद्यार्थी आपल्या बाहुबलांनै

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

धन मिळवून विद्या शिकत असतात. त्यांच्यापाशीं असलेले पैसे संपले, कीं, त्यांनां विश्वविद्यालय सोडावें लागतें. प्रवेशपरीक्षेपर्यंत सर्वांनां शिक्षण फुकट मिळतें. पण विश्वविद्यालयांमध्ये फी द्यावी लागते. कांहीं ठिकाणीं थोडी व कांहीं ठिकाणीं अधिक द्यावी लागते; पण विद्यार्थ्यांच्या शिक्षणामध्ये अडथळा येईल इतकी ती भारी नसते. त्या देशाला 'युना-टेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका'—अमेरिकेचीं संयुक्त संस्थानें ह्मणतात. हीं संस्थानें बरींच सुमारें तेराचौदा आहेत. प्रत्येक संस्थानचें विश्व-विद्यालय आपल्या विद्यार्थ्यांसाठीं विशेष सवलती देतें. कोणीहि बालक अगर बालिका शिक्षणावांचून राहूं नये, असें त्यांचें तत्त्व आहे.

ही झाली संस्थानची शिक्षणपद्धति. आतां अमेरिकेच्या श्रीमंत लोकांची कीर्ति ऐका. अमेरिकेच्या धनवान् लोकांनीं कांहीं मोठमोठीं विश्वविद्यालये स्थापन केलीं आहेत. त्यांपैकीं हारवर्ड, कोलंबिया, शिकागो, जॉन हापकिन्स, येल, स्टॉफर्ड हीं सुप्रसिद्ध आहेत. यांत फी अधिक द्यावी लागते; पण गरीब विद्यार्थ्यांनां ती माफ केली जाते. प्रत्येक मोठ्या शहरीं रात्रीच्या शाळा आहेत. तेथें मजूरलोक विद्या-ध्ययन करितात. कांहीं ठिकाणीं टेक्निकल् कॉलेजे (औद्योगिक संस्था) किंवा युनिव्हर्सिटी स्थापन झालेल्या आहेत. आणि तेथें थोड्या खर्चानें विद्यार्थी कलाकौशल्यांत नैपुण्य मिळवितात. कार्नेजीचें प्रसिद्ध विश्वविद्यालय थोडी फी घेऊन विद्यार्थ्यांनां कलाकौशल्य शिकवितें. वयोवृद्ध विद्यार्थीहि विश्वविद्यालयांत विद्यालभ करून घेतात. शिकागो विश्वविद्यालयांत एक पन्नास वर्षांचा विद्यार्थी एम्. ए. च्या परीक्षेची तयारी करीत होता, आणि त्याची स्त्रीहि त्याच्याबरोबर शिकत होती. कित्येकजण कांहीं विषयांत कच्चे असले, तर तेवढ्या विषयापुरतेच खास विद्यार्थी होऊन ते विषय पुरे करतात. सांगावयाचें तात्पर्य एव-ढेंच, कीं, अमेरिकेच्या लोकांनां शिक्षणाचें महत्त्व फार चांगलें समजलें आहे. सर्वसाधारण लोकांमध्ये होतां होईल तेवढा शिक्षणाचा फैलाव व्हावा, असा त्यांचा प्रयत्न आहे.

अमेरिकेंतील शिक्षणाच्या सोयी.

आतां तेथील परीक्षांची हकीगत एका. ज्या विश्वविद्यालयांत तीन-तीन महिन्यांची टर्म आहे, तेथें तीन महिन्यांनंतर परीक्षा होत असते. त्या परीक्षांप्रमाणें विद्यार्थ्यांना नंबर मिळतात. ज्या विद्यार्थ्यांपाशीं सबंध सालचा खर्च नसतो, ते तीन महिन्यांचें अध्ययन पुरें करून परीक्षा देतात, व निघून जातात. त्यांच्यापाशीं पैसे जमले, कीं, ते पुनः परत येतात, आणि पुढें अध्ययन सुरू करतात. ते एक वर्ष उशीरानें आले, तरी कांहीं हरकत असत नाहीं. यामुळें असा प्रकार होतो, कीं, पैसा भरपूर नसल्यामुळें डिग्री-पदवी मिळविण्याला कित्येकांनां सहासात वर्षे लागतात. ज्या विश्वविद्यालयांत तीन महिन्यांची टर्म नसते, तेथें अर्ध्या वर्षानंतर परीक्षा होते. एकाद्या विषयांत विद्यार्थी नापास झाला, तर महिना दीडमहिन्यानें त्या विषयांत त्याची पुनः परीक्षा होते. विद्यार्थी एकाद्या विषयांत अगदीं कच्चा असला, तर मात्र निरुपाय होऊन त्याला तो विषय आरंभापासून शिकावा लागतो. सांगण्याचें तात्पर्य हें, कीं, अमेरिकेमध्ये शिक्षणाच्या सर्व प्रकारच्या सोयी केलेल्या आहेत. कारण शिक्षणावांचून मनुष्य पशुसमान आहे, अशी त्यांची दृढ समजूत आहे.

मी जेव्हां अमेरिकेंत भ्रमण करावयाला निघालों, तेव्हां अमेरिकेंतील खेडेगांवांत शिक्षणाची व्यवस्था कशी आहे, हें पहाण्याचा मला मोठा शोक होता. लहानसहान गांवामध्येहि सांप्रतच्या गरजांप्रमाणें शाळा स्थापन झालेल्या आहेत, हें पाहून मला फार आश्चर्य वाटलें. जेथें दहा घरे आहेत, तेथेंहि एकादी चांगली शाळा आहेच. कालिफोर्नियाच्या दक्षिणभागांत रेडलॅन्डस् नांवाचा एक सुंदर कसबा आहे. त्या कसब्यांत मी एक व्याख्यान दिलें. तेथील हायस्कुलांत सर्व विद्यार्थ्यांसमोर, मोठ्या दिवाणखान्याच्या फ्लॉरफार्मवर मी जेव्हां बोलावयाला उभा राहिलों, आणि माझ्यासमोर सुंदर निरोगी मुलांमुलींनां मी पाहिलें, तेव्हां माझे हृदय भरून आलें. माझ्या मनांत असें आलें, कीं, या देशांत मुलांमुलींच्या शिक्षणाची किती उत्तम व्यवस्था केलेली आहे, आणि आमच्या अभागी देशांत लाखों मुलें अविद्यांधकारांत पडलेलीं

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

आहेत—किड्याप्रमाणें उत्पन्न होत आहेत व मरत आहेत ! जीवन ह्मणजे काय वस्तु आहे, याचा त्यांना पत्ताहि नाही. जीवनसुखाचा स्वाद चाखण्यास समर्थ करणारें प्रमुख साधन शिक्षण हेंच आहे !

—
प्रकरण पांचवें.

विद्यार्थ्यांचे परिश्रम.

बर्फाचकहो, ऐका. आतां अमेरिकेच्या गरीब विद्यार्थ्यांच्या परिश्रमाची सविस्तर कहाणी मी तुझाला सांगतां. आमच्या देशांत ग्रीष्मऋतूंत काम करणें फार कठिण असतें; पण अमेरिकेंत या ऋतूंतच विद्यार्थी मेहनत व मजूरी करून द्रव्य मिळवितात. या ऋतूंत धन मिळवून विद्यार्थी आपल्या वर्षाच्या खर्चाची वेगमी करून ठेवितात. गरमीच्या दिवसांत चोहोंबाजूनीं कामाची गर्दी असते. शेतकऱ्यांनां एका क्षणाचीहि फुरसत मिळत नाही. हंगामाच्या दिवसांत ते मजूरदारांनां रोज नऊ रुपये देतात. थंडीच्या दिवसांत तेथें बर्फ पडतें. त्या वेळीं पर्वत, जंगल वगैरे सर्व बर्फाच्छादित होतें. त्या दिवसांत जंगलपहाड येथून लांकुडफाटा कांहीं येत नाही. बहुतेक प्रांतांत नद्याहि थिजून जातात. यामुळें हिवाळ्याच्या दिवसांत शहर खेरीजकरून बाहेर फार थोडें काम असतें. उन्हाळ्याच्या दिवसांत बर्फ वितळून जातें, रस्ते मोकळे होतात, नद्या वाहूं लागतात. चोहोंबाजूनीं कामाचा सारखा तडाका सुरू होतो. शोधिलें तरी मनुष्य मिळत नाही. वर्तमानपत्रांत 'पाहिजेत' अशा पुष्कळ जाहिराती भरलेल्या असतात. नोकरी देवविणाऱ्या कचेऱ्यांत टेलिफोन एकसारखा चालू असतो.

सांगावयाचें तात्पर्य हें, कीं, ग्रीष्मऋतूंत अमेरिकेंत जणूं काय पैशांचा वर्षाव होतो. जो कोणी कर्तवगारी करतो, तो इतकें कांहीं धन मिळवितो, कीं, त्याला संबन्ध वर्षभर आनंदांनै स्वस्थ बसून आपला निर्वाह करतां येतो. विद्यार्थीहि ग्रीष्मऋतु सुरू होण्यापूर्वीं एकदोन महिने

विद्यार्थ्यांचे परिश्रम.

आधींच आपल्या कामाच्या शोधांत असतात. जून, जुलई, ऑगस्ट व सप्टेंबर या चार महिन्यांत विद्यार्थी इतके पैसे मिळवितात, कीं, त्यामुळे त्यांना संबंध वर्षांचे शिक्षण मजेने घेतां येते.

पण याला मजूरी करण्याचा अभ्यास असावा लागतो. मला माझ्या त्या वेळच्या स्थितीची चांगली आठवण आहे. अमेरिकेंत पहिल्या वर्षी मला शेतावर काम करावें लागलें, तेव्हां साधारण मजुरापेक्षांहि माझे काम कमी होत असे. सोळा वर्षांचीं मुलें माझ्याहून अधिक काम करीत. एकदां शेताच्या मालकानें मला एका नवीन कामावर लाविलें. गव्हांनीं भरलेली एक गाडी रस्त्यावर उभी होती, व एक फांवडा घेऊन ते गहूं एका कोठडींत भरावयाचे होते. गहूं आंत घालण्यासाठीं कोठडीच्या भिंतींत एक चौकोनी छिद्र होतें. गाडीवर उभें राहून फांवड्यानें गहूं त्या छिद्रांतून आंत फेंकावयाचे, एवढेंच तें काम होतें. मीं तें काम कधींहि केलें नव्हतें. फांवड्यानें मीं जेव्हां गहूं आंत फेंकले, तेव्हां त्यांपैकीं अर्धे आंत गेले आणि अर्धे गाडीच्या खालीं रस्त्यावर पडले. हें पाहून शेताचा मालक मोठ्यानें हंसला, आणि फांवडा कसा चालवावा हें त्यानें मला दाखविलें. मीं पुनः प्रयत्न केला, पण या वेळीं सर्व गहूं खालीं रस्त्यावर पडले! माझे साथीदार ह्मणजे दुसरे मजूरदार मुलगे माझ्याकडे पहात उभे राहिले होते, ते सर्व खदखदां हंसले. कारण ते वयानें जरी माझ्याहून लहान होते, तरी ते हें काम माझ्यापेक्षां फार चांगलें करीत असत. माझी दशा पाहून मला फार लाज वाटूं लागली. लहानपणापासून काम करण्याचा अभ्यास नसल्यामुळे माझी अशी दुर्दशा झाली. जरी मी त्या सर्वांपेक्षां अधिक ताकदवान व धड्काड्हा होतो, तरी मजुरीचा अभ्यास नसल्यामुळे माझ्या हातून त्यांच्या इतकें काम होत नसे. अमेरिकन मुलांना लहानपणापासून काम करण्याची सवय असते. कितीहि कठिण काम असलें तरी ते घाबरत नाहींत. आमच्या देशांत मजुरांचा वर्ण निराळा

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

आहे. उच्च वर्णातील लोकांचीं मुलें काम करणें हें कमीपणाचें समजतात. अमीरउमरावांच्या मुलांची तर गोष्टच सोडून द्या. त्यांना कपडे घालण्यासहि नोकर पाहिजेत ! शौचाला जावयाचें असलें हणजे एक मनुष्य लोटा घेऊन त्यांच्याबरोबर जातो. हातांनीं काम करणें हें हलकें व कमी दर्ज्याचें आहे, अशी त्यांची समजूत झालेली असते. काम करणाऱ्या लोकांचा दर्जा कमी आहे, ते मनुष्यच नव्हेत, असें ते समजतात !

अशा संस्कारांमध्ये वाढलेले हिंदी तरुण अमेरिकेंत जाऊन काय करितील ? आमच्या तरुणांची अमेरिकेला जाण्याची इच्छा असली, तर प्रथमतः त्यांनीं मजुरी करण्याचा अभ्यास केला पाहिजे. ' आपण अमेरिकेंत जाऊन हरएक प्रकारचे कष्ट सहन करण्याला तयार आहों,' असें पुष्कळ देशवांधव मला लिहितात. तें वाचून मला हंसूं येतें. अमेरिकेंत काबाडकष्ट कसे करावे लागतात, याची आमच्या विद्यार्थ्यांना कल्पना नाही. ते समजतात, कीं, तेथें एक वेळ खाण्याला मिळालें तरी बस आहे. तेवढ्यावरच आपण निर्वाह करूं. हिंदी लोक मुकेंने मरण्यांत फार शहाणे आहेत, ही गोष्ट जगत्प्रसिद्ध आहे. ते एक मूठभर चणे खाऊन राहूं शकतात. पण या शहाणपणाला अमेरिकेंत दुसरीच संज्ञा आहे. तेथें पोट भरण्यांत जे लोक कुशल आहेत, त्यांनाच मान आहे. जो काम करतो तोच पोट भरूं शकतो, आणि ज्याला लहानपणापासून काम करण्याचा अभ्यास आहे, तोच काम करूं शकतो. अमेरिकेंत मोठमोठे धनवान् लोक आपल्या मुलांना फॅक्टरींत, कारखान्यांत काम करण्याला पाठवितात. त्यांचे मुलगे कारखान्यांत, गिरण्यांत साधारण मजुरांप्रमाणें काम करितात. मनुष्यानें मजूर होणें हें काहीं ध्येय नाही, हें खरें; पण मजुरीचा त्याला अभ्यास असणें हें अवश्य आहे. कारण त्यापासून मनुष्य तरतरीत, चलाख, डौलदार व मजबूत होतो. हिंदुस्तानचे सुशिक्षित लोक हातानें काम करणें

हे पाप समजतात. ते महिना दहा रुपयांच्या नोकरीसाठी लोकांची खुशामत करीत फिरतील, पण स्वतंत्रपणे मजुरी करून आपलें पोट भरणें त्यांच्या हातून होणार नाही !

अमेरिकेंत विद्यार्थ्यांना शेतावर हरएक प्रकारचें काम करावें लागतें. तेथें घोड्यांकडून शेतीचें काम करून घेण्यांत येतें. बैल फक्त मांसाकरितांच पाळण्यांत येतात. नांगर चालविणें, पीक कापणें, घोड्यांची रखवाली करणें इत्यादि कामें विद्यार्थ्यांना करावीं लागतात. कित्येक शेतकऱ्यांपाशीं मजूर बारा महिने सारखें काम करितात; पण ग्रीष्म ऋतूंत त्यांना अधिक मजूर लागतात. यंत्रें चालविण्यांत जे विद्यार्थी निपुण ससतात, त्यांना अधिक मजुरी मिळते. तेथें शेतांतील पीक व गवत यंत्रानें कापलें जातें. बहुतेक सर्व कामें यंत्रांनीं होतात. तेथील शेतकरी आपल्या नशीबावर हवाला देऊन स्वस्थ बसत नाहीत. आपल्या पिकांच्या वाढीसाठीं ते नानातऱ्हेचे रासायनिक पदार्थ उपयोगांत आणतात. पिकाला जेव्हां कीड लागते, तेव्हां 'पेटिसग्रीन' नामक पदार्थानें सर्व रोप्यांना ते स्नान घालतात. त्यायोगें सर्व कीड मरून जाते. थंडीच्या दिवसांत जेव्हां धुक्याची भीति असते, तेव्हां शेतकरी शेतांत विस्तव पेटवून पुष्कळ धूर करितात. तो धूर वर जाऊन थंडीमुळें एके ठिकाणीं जमतो, आणि शेतावर तंबूसारखें आच्छादन घालून पिकाचें संरक्षण करितो. मक्याच्या धाटाला अधिक कणसें लागावीं ह्मणून अमेरिकन लोकांनीं प्रयत्न केलेले आहेत. जेथें दहा लागतात तेथें पंधरा कणसें लागावीं, असा त्यांचा प्रयत्न आहे. पिकाची पैदास अधिक व्हावी ह्मणून ते पुष्कळ शास्त्रीय प्रयोग करून त्यांपासून आपला फायदा करून घेत आहेत. आमच्या देशांतील लोकांप्रमाणें सारा दोष ईश्वराच्या माथीं मारून ते मोकळे होत नाहीत. ईश्वर ख्यायी आहे. हिंदी लोकांशीं त्याचा कांहीं द्वेष नाही. अमेरिकेचे लोक जें काम करितात, तें आह्मांलाहि करितां

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

येतें. फरक एवढाच आहे, कीं, अमेरिकन लोक उद्योगी, साहसी आणि पुरुषार्थी आहेत. कठिण प्रसंग येऊन ठेपले ह्मणजे ते घाबरून जात नाहीत, इतकेंच नव्हे, तर त्यांशीं झुंजण्यांत आपलें मोठें भाग्य आहे, असें ते समजतात. कितीहि कठिणांत कठिण काम असलें, तरी त्यांच्या सिद्धीचा उपाय ह्मणून असतोच. तो उपाय जाणण्यासाठींच परमात्म्यानें आपणांला बुद्धि दिलेली आहे. जे आपल्या बुद्धीचा उपयोग करीत नाहीत, ते नेहमीं धक्केच खात असतात.

आणखीहि एक गोष्ट आहे. आमचे लोक जुन्या रीतिभातींचे—रूढींचे दास आहेत. पुढें जाणें त्यांनां आवडत नाहीं. चार हजार वर्षांपासून जो नांगर चालत आला आहे, तोच आजहि आहे ! कोणताहि नवीन शोध करण्याची शक्ति आमच्या लोकांमध्ये नाहीं. कारण आमचें प्रेम जुन्यापुराण्या वस्तूंवरच अधिक आहे. अमेरिकेचे लोक नेहमीं नवीन गोष्टी काढण्यांत चूर आहेत. त्यामुळें तेथें नेहमीं नवीननवीन शोध लागत आहेत.

शेतांशिवाय, गिरण्यांत, कारखान्यांत आणि बागांत विद्यार्थी काम करितात. लांकूड कापण्याच्या पुष्कळ गिरण्या अमेरिकेंत आहेत; आणि तेथें दरसाल क्रोडों फूट लांकूड कापलें जातें. तेथें काम करणाऱ्या विद्यार्थ्यांला कमींत कमी रोज सहा रुपये मिळतात. उन्हाळ्याच्या तीन महिन्यांत विद्यार्थी या गिरण्यांत काम करून पुष्कळ पैसा कमावितात. मी जेव्हां 'रेनियर'च्या लांकडांच्या गिरणींत काम करीत होतो, तेव्हां मला रोज पावणेसात रुपये मिळत असत. साडेतीन महिने काम करून माझ्या शिक्षणाला पुरतील इतके पैसे मीं जमविले. माझा खर्च दरमहा पंचवीस रुपये होता.

बागांत काम करणाऱ्या विद्यार्थ्यांनां त्यांच्या मेहनतीप्रमाणें मजुरी मिळते. बागांतील बहुतेक काम विद्यार्थी मकल्यानें करितात. अमेरिकेच्या पश्चिम भागांत फळांची पैदास फार होते. सफरचंद, अंगूर,

नाशपाती, बदाम, अक्रोड, संत्रें इत्यादि फळें तेंथें पुष्कळ पिकतात. वागेचा मालक काम करणाऱ्या लोकांना लहानलहान पेढ्या देतो. एक पेटी भरली ह्मणजे अडीच आण्यांपासून पांच आण्यांपर्यंत मजुरी मिळते. विद्यार्थी जितक्या पेढ्या भरतील, तितकी त्यांना मजुरी मिळते. याप्रमाणें वागांत काम करून विद्यार्थी रोज आठनऊ रुपये मिळवितात.

बरेच हिंदी लोक अमेरिकेंत फळाचें काम करितात. कॉलिफोर्निया, आरेगान, वाशिंग्टन (पॅसिफिक किनारा) या तीन संस्थानांत फळ अधिक होतें. मजुरांची जरूरी इतकी असते, कीं, वागेचा मालक आर्जवें करून मजुरांना बेऊन जातो. फळांच्या ऋतूंत चोहोंकडे मजुरांची फार उणीव असते. कारण मेहनतीचा व मजुरीचा तो मोसम असतो. उन्हाळ्यांत अलास्का येथील सोन्याच्या खाणीं सुरू होतात. तेंथें रोज पंचवीसतीस रुपये मजुरी मिळते. पण काम बरेंच विकट असतें, आणि खर्चहि अधिक लागतो. पुष्कळ मजूर तेंथें जातात. या ऋतूमध्ये कोलंबिया समुद्रावर मासे धरण्याचा कारखाना चालत असतो, तेंथें विद्यार्थी काम करून रोज आठदहा रुपये मिळवितात.

येथें अमेरिकेच्या वागांविषयीं आणखी दोनचार गोष्टी आर्हीं सांगितल्या, तर तें अप्रासंगिक होणार नाहीं. आमच्या देशांतील लोकांना वनस्पतिविद्येचें कांहीं ज्ञान नसतें. अमेरिकेच्या सर्व संस्थानांमध्ये सरकारतर्फे एक्सपेरीमेंट स्टेशन्स—(Experiment Stations) प्रयोग करून पाहण्याचीं स्थळें स्थापन झालेलीं आहेत, आणि तेंथें कृषिशास्त्र-वेत्ते हे शेतकी आणि फळें यांविषयीं शोध व प्रयोग करीत असतात. जेव्हां कोणत्याहि शेताला किंवा वागेला कोणत्याहि प्रकारचें नुकसान होतें, तेव्हां जंतुशास्त्रविशारद विद्वान् तेंथें जातात आणि त्या नुकसानीचें कारण शोधून काढण्याचा यत्न करितात. प्रत्येक वर्षीं ग्रीष्मऋतूंत शेतकऱ्यांच्या हितासाठीं विद्वान् अध्यापक सरकारतर्फे चांगलीं उपयुक्त व्याख्यानें देतात, आणि शेतकऱ्यांना शेती व फळफळावळ यांच्या

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

विद्येचें मर्म समजावून देतात. हीं व्याख्यानें दीड दोन महिने चालतात. शेतकऱ्यांचा त्यांपासून फार फायदा होतो. वृक्षांचे गुणदोष, त्यांच्या संवयी, त्यांचे शत्रुमित्र, या सर्वांचें त्यांनां ज्ञान दिलें जातें. प्रत्येक गोष्ट शास्त्रीयरीत्या इतकी चांगली समजावून दिली जाते, कीं, ऐकणारा त्यापासून फार आनंद होतो आणि ज्ञान मिळतें. आमच्या देशाप्रमाणें अमेरिकेचे शेतकरी मूर्ख नसतात. ते आपल्या धंद्यांत पूर्ण वाकवगार असतात. अंगीकृत कार्याच्या सिद्धीसाठीं ते आपल्या बुद्धीचा चांगला उपयोग करितात.

कॉलिफोर्नियाच्या एका मोठ्या उद्यानांत सफरचंदाच्या वृक्षांनां एकदां कीड लागली होती. फळांची फार हानि झाली. आठनऊ लाख डॉलर किंमतीचीं फळें नाश पावलीं. उद्यानाच्या मालकानें सरकारला याविषयीं लिहून कळविलें. सरकारनें जंतुशास्त्रवेत्ते तेथें पाठविले, त्यांनीं येऊन त्या फळझाडांवरील किड्यांची परीक्षा केली, त्यांच्या संवयी समजून घेतल्या, ते क्रिडे काय खातात हें सर्व पाहिलें. कांहीं महिने या शोधांत घालवून त्यांनीं त्या किड्यांचा नाश करणारा असा एक रस तयार केला. दुसऱ्या वर्षीं त्या वृक्षांनां पुष्कळ फळें आलीं, आणि बागेच्या मालकाला पहिल्यापेक्षां चौपट फायदा झाला.

हिंदुस्तानांतहि पुष्कळ प्रकारचीं फळें होतात. विशेषेकरून आंबा अधिक पिकतो. आम्रफळांचा व्यापार कसा करावा, हें आमच्या लोकांनां समजत नाहीं. उष्णतेपासून फळांचा बचाव कसा करावा, याचा उपाय त्यांनां माहित नाहीं. उष्णतेनें फळें लवकर सडतात. फळें सडणें कसें बंद करावें, हें आमच्या लोकांनां मुळींच ठाऊक नसतें. सानफ्रान्सिस्को शहरापासून न्यूयॉर्क शहर साडेतीन हजार मैल आहे. पण सानफ्रान्सिस्कोहून लाखों रुपयांची फळफळावळ न्यूयॉर्कला पाठविली जाते. ती वाटेंत सडून जात नाहीं. याचें कारण काय ? अमेरिकेच्या दक्षिण संस्थानांत उन्हाळा फार कडक असतो. तेथें

विद्यार्थ्यांचे परिश्रम.

पारा ११० डिग्रीवर चढतो. अशा स्थितींत कांहीं योग्य उपाय केल्याशिवाय फळफळावळ इतकी लांब पाठवितां येणार नाही. आपल्या देशचा व्यापार वाढविण्यासाठीं अमेरिकन लोकांनीं ' रेफरी-जेठर ' नांवाची गाडी तयार केली आहे. त्या गाडीनें फळफळावळ देशदेशान्तराला पाठविली जाते. या गाडीच्या आंत बर्फाचा एक खाना असतो, आणि बाकीच्या भागांत फळांच्या पेठ्या ठेविलेल्या असतात. हवा खेळण्यासाठीं छिद्रेहि ठेविलेलीं असतात. बर्फ बाह्य-उष्णतेपासून फळांचें संरक्षण करतें, आणि तीं सडूं देत नाहीं. या एका उपायानें अमेरिकन लोकांनीं आपला व्यापार क्रोडों रुपयांनीं वाढविला आहे. आज अमेरिकेची फळफळावळ जगांतील सर्व मार्केटांत विकली जात आहे.

याशिवाय अमेरिकन लोक नवीननवीन फळे तयार करण्याचे शोध करीत आहेत. कांहीं फळांचे कांटे नाहींसे करणें, फळांच्या आंतील मोठी गुठली लहान करणें, फळांचा आंबटपणा नाहींसा करून तीं गोड करणें, या चिंतनेंत ते लोक आहेत. एकदां एका बागेंत एक नव्या जातीचे किडे पाहण्यांत आले. त्यांना नाहींसे करण्यासाठीं पुष्कळ उपाय करून पाहिले; पण त्यांत यश आलें नाही. त्या किड्यांपासून लाखों रुपयांची हानि झाली. शेवटीं कष्टी होऊन अमेरिकन सरकारनें त्या किड्यांच्या नाशाचा उपाय शोधून काढावा, या हेतूनें आपले विद्वान् परदेशांत पाठविले. पुष्कळ प्रयत्नांतीं या किड्यांचा घोर शत्रु असलेला असा एक किडा जपानांत मिळाला. त्या किड्याची संतति अमेरिकेतील बागांत आणून या हानिकारक किड्यांपाशीं ठेविली. हळुहळू जपानी किड्यांची वाढ झाली, आणि त्यांनीं त्या फलनाशक किड्यांचा समूळ नाश केला. याप्रमाणें अमेरिकेचे लोक विचारानें पक्के, निश्चयाचे पुरे आणि हिंमतीचे पुतळे आहेत. त्यांचा दृढनिश्चय व त्यांचें चातुर्य जगप्रसिद्ध आहे. त्यांनीं विनबियांचीं संत्रें तयार केलीं आहेत. त्यांनां ' नेवल '

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

असें ह्मणतात; आणि तीं खाण्याला फार मिष्ट असतात. आरीजोन संस्थानांत ऊन्ह फार कडक असते. तेथें प्रथम कोणतेहि फळ होत नसे. तेथील जमीन फार रेंताड होती. पण अमेरिकन सरकारनें लाखों रुपये खर्च करून 'रूझवेल्ट रिझर्व्हायर' नांवाचा एक बंधारा तयार करून त्याच्या द्वारा आरीजोनांतील भूमीला पाणी दिलें. आतां आरीजोनांत मोठ्या जातीचीं संत्रें होतात. हिंदुस्तानांत पाण्याची कमतरता नाहीं; येथें मोठमोठे पहाड आणि नद्या आहेत; असें असूनहि येथील लोक पाण्यासाठीं फार कष्ट काढिताहेत. देशांतील लोकांना कलाकौशल्याची चांगली माहिती असली, आणि सृष्टीतील पदार्थांचा यथायोग्य उपयोग कसा करावा हें त्यांना अवगत असलें, ह्मणजे त्यांना बिलकूल त्रास होणार नाहीं. पण येथील लोकांना आपण स्वतः कांहीं करावें असें वाटत नाहीं. दुसऱ्यावर विश्वास ठेवून राहणें हेंच त्यांना आवडतें. फक्त 'भिक्षादेही'ची संवय आह्वाला आहे, आणि त्यामुळे आमच्या हातून कांहीं होत नाहीं.

फळाच्या कामाशिवाय आणखी कोणतीं कामें विद्यार्थी करितात हें सांगितलें पाहिजे. ज्या विद्यार्थ्याला कांहीं हुन्नर माहित आहे त्याला, अमेरिकेंत धन संपादन करणें सोपें आहे. विद्यार्थी कांहींना कांहीं हुन्नर अवश्य शिकतातच. उदाहरणार्थः—शिंप्याचें काम, घड्याळाचें काम, जोडे करण्याचें काम, सुताराचें काम, मेस्त्रीचें काम व हिशेबाचें काम इत्यादि. असे विद्यार्थी दोनचार तास काम करून आपल्या खर्चापुरता पैसा मिळवितात. आमच्या देशांत दोघां इसमांची गांठ पडली, कीं, पहिला प्रश्न असा विचारण्यांत येतो, कीं, 'आपला वर्ण कोणता?' काम पडलें तर अमेरिकेंत असा प्रश्न विचारतात, कीं, आपला पेशा—धंदा कोणता? तेथें सर्व लोक कांहींना कांहीं हस्तकौशल्याचें काम शिकून स्वतंत्रपणें आपला उदरनिर्वाह चालवितात आणि स्वतःला सुसंस्कृत करण्यासाठीं साहित्याचा अभ्यास करतात. आह्वाला शाळांत

विद्यार्थ्यांची सहल.

जें शिक्षण मिळतें, तें नोकरी करण्यासाठीं नाहीं. लिहिणें-वाचणें हें तर प्रत्येक माणसाला आलेंच पाहिजे. पण लिहिणेंवाचणें येणें ह्याजें शिक्षण नव्हे. शिक्षणाचा अभिप्राय-खरें मर्म आह्मीं जाणत नसल्या-मुळें आमची अधोगति होत आहे.

—•—
प्रकरण सहावें.

विद्यार्थ्यांची सहल.

अमेरिकेंतील विद्यार्थ्यांच्या आणखी कांहीं आश्चर्यकारक गोष्टी वाचकांना सांगतो. उन्हाळ्याच्या दिवसांत प्रत्येक वर्षी शेंकडों विद्यार्थी अमेरिकेहून यूरोपांत जातात. त्यांच्यापार्शी फारच थोडा पैसा असतो. हायस्कूल किंवा कॉलेज यांची परीक्षा उत्तीर्ण झाल्यावर ते विद्यार्थी यूरोपांत सहल करावयाला निघतात. न्यूयॉर्कहून मॅन्चेस्टरला जी आगवोट जाते, तिच्यावर त्यांना नोकरी मिळते. बहुतकरून बायसिकलहि ते आपल्याबरोबर घेतात. इंग्लंडांतील रस्ते फार सुंदर आहेत. बायसिकल तेथें फार चांगलें काम देते. प्रवासापासून त्यांना फार आनंद होतो. इंग्लंड व स्कॉटलंड येथें फिरून नंतर ते यूरोपांतील इतर देशांत जातात, आणि बायसिकलद्वारा यूरोपखंडभर भ्रमण करितात. अमेरिकेच्या मानानें यूरोपांत खर्च फार कमी येतो. यामुळें थोड्या रूपांत सहल करणाऱ्या विद्यार्थ्यांचें काम सहज भागते. तीनचार महिने यूरोपांत फिरून विद्यार्थी परत स्वदेशीं येतात, आणि विश्वविद्यालयांत पुनः दाखल होऊन विद्याभ्यास करितात.

विचार करा, कीं, हे विद्यार्थी इतका अनुभव मिळवून कॉलेजांत दाखल होतात. पण आमच्या येथें विद्यार्थी असे असतात, कीं, त्यांना आपल्या देशाचीहि स्थिति माहीत नसते ! असे विद्यार्थी हे नुसते पुस्तकांतील कृमि होत. बाह्यजगाचा त्यांना कांहीं अनुभव नसतो. पुष्कळ अमेरिकन विद्यार्थी हायस्कूलांतील परीक्षा पास झाल्यावर पृथ्वीप्रदक्षिणा

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

करण्यासाठी बाहेर निघतात, आणि एक वर्षभर अशा प्रकारें ज्ञान मिळवून नंतर कॉलेजांत दाखल होतात. दोहों विद्यार्थ्यांत किती अंतर !

न्यूयॉर्कहून मॅचेस्टर अथवा लिव्हरपूलपर्यंत आगबोटीवर विद्यार्थ्यांना काय काम करावें लागतें, हें येथें सांगणें अप्रासंगिक होणार नाही. जेव्हां मी अमेरिकेहून इंग्लंडला आलों, तेव्हां मलाहि जहाजावर नोकरी करावी लागली. मला बैलांना चारा घालण्याचें काम करावें लागत होतें. अमेरिकेहून दर महिन्याला पुष्कळसे बैल इंग्लंडला पाठविण्यांत येतात. त्या बैलांच्या राखणीसाठीं मनुष्यांची जरूरी असते. मोठ्या पहाटे ह्मणजे साडेतीन वाजतां उठून आम्हीं प्रथम बैलांना पाणी पाजवीत होतो. त्यानंतर त्यांना गवत घालीत होतो. दहा वाजण्याच्या सुमाराला सारे खलाशी गवताचे गट्टे खाऊन वर आणीत. नंतर बैलांना मका घालण्यांत येई. दुपारीं तीन वाजण्याच्या सुमाराला मी पुनः गवत वगैरे साफ करून बैलांना भुसा घालीत होतो. याप्रमाणें मला रोज सातआठ तास काम करावें लागे. याच्या मोबदला जहाजवाल्याकडून भाडें माफ होत असे आणि खाना मिळत असे. अमेरिकन विद्यार्थी याप्रमाणें कामें करून अटलांटिक महासागर ओलांडून पार जातात.

—•—
प्रकरण सातवें.

स्वावलंबी विद्यार्थी.

अमेरिकन लोक आमच्या देशांतील लोकांप्रमाणें मजुरांना कमी लेखीत नाहीत. मालक आणि मजूर हे सारखेच समजले जातात. मी ज्या शेतांत काम करीत होतो, तेथें आम्हीं सर्व लोक सारखे खुर्चीवर बसून खाना खात होतो. आमच्यांत कोणताहि भेदभाव नव्हता. या कारणामुळे अमेरिकेंत प्रत्येकाला मजुरी किंवा काम करण्याची हिंमत येते. स्वतःवर अवलंबून राहून जे कोणी विद्या शिकतात, त्यांना तेथील समाज फार मान देतो आणि सर्व ठिकाणीं त्यांचा गौरव

होतो. स्वावलंबी विद्यार्थी फार चांगले असतात, असें विश्वविद्यालयां-
तील अध्यापक समजतात, आणि स्वशक्त्यनुसार त्यांना मदत व उत्ते-
जन देतात. कांहीं क्रोडोपतींचे मुलगे आपल्या आईबापांचे कांहींहि
पैसे न घेतां आपल्या बाहुबलानें धन मिळवून विद्याभ्यास करितात.
सर्व ठिकाणीं अशा विद्यार्थ्यांचा सन्मान होतो. गिरणीवाले व खाणी-
वाले लोक स्वावलंबी विद्यार्थ्यांना सर्वांत आधीं नोकरी देतात. विश्व-
विद्यालयांतील विद्यार्थीहि एकमेकांना साहाय्य करितात, आणि गरीब
विद्यार्थ्यांना मोठ्या प्रेमानें वागवितात.

हिंदी विद्यार्थी अमेरिकेंत फार थोडे आहेत, व जे कांहीं थोडे आहेत,
त्यांना मेहनत व मजुरी करतां येत नसल्यामुळें फार कष्ट सोसावे लागतात.
या कारणामुळें आमचे दोन विद्यार्थी न्यूयॉर्कमध्ये भुकेनें मरण पावले
हे दोघे हिंदुस्तानांतून नुकतेच आले होते. हिंवाळ्याचे दिवस होते.
यांच्या हातून काम कांहीं होईना. जेव्हां त्यांच्यापार्शीं असलेले रुपये
संपले, तेव्हां नोकरी शोधण्याच्या ऐवजीं त्यांनीं खोलींत स्वतःला कोंडून
घेऊन आत्महत्या करून घेतली. हिंदुस्तानांत पुष्कळ लोक भीक मागून
आपलें पोट भरतात. पण अमेरिकेंत भीक मागणें हा कायद्याच्या दृष्टीनें
गुन्हा आहे. तेथें भीक मागणाराला तुरुंगांत जावें लागतें आणि उद्योगी
पुरुषाला प्रत्येकजण चाहतो. मी ज्या सालीं आरीगान विश्वविद्यालयांत
शिकत होतो, त्या वर्षीं मजुरी फार कमी होती. टर्म संपल्याबरोबर
मी नोकरीचा शोध केला. कॉलेजच्या प्रेसिडेंटसाहबांचें पत्र घेऊन
मी मोठ्या मुष्किलीनें नोकरी मिळविली. यूजीन गांवाहून थोड्या अंतरा-
वर 'वेन्डलिंग' नांवाचा एक कसबा आहे. 'बूथ कैले कंपनी'ची
तेथें एक मोठी गिरणी आहे. त्या गिरणींत मी काम करण्याला गेलों.
पावणेसहा रुपये मजुरी मला रोज मिळत होती. मी हिंदी आहे
हें तेथील मजुरांना प्रथम कळलें नाहीं. मी फ्रेंच आहे असें ते समजले.
एके दिवशीं एक ह्यातारा मजूर माझ्यापार्शीं आला आणि आपल्या चर्च-
मध्ये मी व्याख्यान द्यावें असें सांगूं लागला. मी त्याच्या विनंतीला मान

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

देऊन ' भारतवर्षाची सांप्रतची स्थिति ' या विषयावर व्याख्यान देण्याचें कबूल केलें. नेमलेल्या वेळीं देवाल्यांत पुष्कळ लोक जमले आणि मी त्या सर्वासमोर हिंदुस्तानच्या सांप्रतच्या स्थितीचें वर्णन केलें. माझें भाषण ऐकून सर्व लोक प्रसन्न झाले, आणि माझ्याशीं सहानुभूति दाखवूं लागले. व्याख्यान देऊन मी परत घरीं येऊन पहातो, तों माझ्या खोलीचा दरवाजा उघडा असलेला दिसला. मला त्याची विशेष काळजी वाटली नाहीं; कारण घाईनें जातांना मीच चुकून दरवाजा उघडा ठेवून गेलों असेन, असें मला वाटलें. शिवाय चोरीचें भय वाटण्यासारखें कोणतेंहि सामान मजपाशीं नव्हतें. यामुळें मी स्वस्थ झोपीं गेलों. पहाटे उठून जेव्हां मी स्वयंपाक करण्याच्या तयारीला लागलों, तेव्हां विस्तव लवकर पेटेना व धूर बाहेर जाईना. मी मोठ्या काळजींत पडलों, पण कांहीं थांग लागेना. खाण्यापिण्याचा विचार सोडून देऊन मी तसाच रिकाम्या पोटांनं गिरणींत काम करण्याला निघून गेलों. बरोबर सात वाजतां मला गिरणींत जावयाचें होतें. बारा वाजेपर्यंत तेथें काम करून मी परत आलों आणि चुलीचें नाट निरीक्षण करूं लागलों; तेव्हां मला आढळून आलें, कीं, धूर जाण्याच्या नळांत कोणी कपडे ठांसून भरले आहेत. मी ते कपडे काढून बाहेर फेंकून दिले आणि नंतर रोटी तयार करून खाह्मी. माझी अशी थट्टा केल्याबद्दल मला मोठा राग आला, आणि ती कोणी केली असावी, याचा मी विचार करूं लागलों. व्याख्यानाच्या आदल्या दिवशीं एक मजूर माझ्या खोलींत आला होता, त्याचेंच हें काम असावें, असें मला वाटलें. एक वाजतां मी पुनः कामावर गेलों. त्या वेळीं त्या मजुराला मी साधारण स्वरांत ह्मटलें " असलें निंद्य काम करणें आपणाला उचित नव्हतें. "

" कोणतें काम? " असें तो मजूर ह्मणाला.

मी ह्मटलें " आतां आपण छपवून कां ठेवितां ? आपणच माझ्या खोलींत जाऊन धुराडाच्या नळांत कपडे ठांसून भरले. "

स्वावलंबी विद्यार्थी.

“ मीं हें केलें नाहीं—” असें तो मोठ्या रागानें बोलला.

“ बरें, फार चांगलें ! ” असें ह्मणून मी स्वस्थ राहिलों आणि आपल्या कामाला लागलों. त्या मजुरानें आपल्या साथीदाराला पाठवून मला मारण्याची धमकी दिली. पण अशा धमक्यांना मी थोडीच भीक घालीत होतो. मी अशा कित्येक उद्धट मजुरांना हात दाखविला होता. मी त्याच्या साथीदाराला ह्मटलें ‘ त्या भ्याडाला जाऊन सांग, मी त्याला असा मार देईन, कीं, त्याची त्याला नेहमीं याद राहिल.’ माझे उत्तर ऐकून त्या मजुरानें माझ्याविरुद्ध कट सुरू केला. माझी जन्मभूमि हिंद आहे हें त्याला आणि सर्वांना कळून चुकलें होतें. हिंद एक अनाथ देश आहे, हें त्यांना माहीत होतें. यास्तव मी त्यांना भिऊन शरण जाईन असें त्या कटांतील मजूर मंडळीला वाटलें. लहानपणापासून मला कुस्तीचा अभ्यास असल्यामुळें मी माझ्यापेक्षां दीडपट जवानाला ऐकणार नाहीं, अशी मला खात्री होती. हा हिंदी कांहीं लहानसहान नाहीं, असें तो मजूरहि जाणत होता. त्यानें आपल्या मित्रांना माझ्या विरुद्ध चेतविलें, आणि मला मारण्याचा बेत केला. ते सर्व एक गांवचे मजूर होते. पॅसिफिक किनाऱ्यावर हिंदी लोकांच्या विरुद्ध तेथील वातावरण क्षुब्ध झालें होतें. त्याचा परिणाम या लोकांवरहि झालेला होता. मी हिंदी आहे हें जोंपर्यंत त्यांना माहीत नव्हतें, तोंपर्यंत ते माझ्यावर प्रसन्न होते, आणि मला कमी लेखीत नव्हते. माझ्या देशाचें नांव समजतांच त्यांची तऱ्हा बदलली, आणि या हिंदीला येथून घालवून घावें, असा त्यांनीं निश्चय केला.

एके दिवशीं दुपारीं बारा वाजल्यावर शीट वाजली आणि मजूर लोक आपला खाना खाण्याला गेले. तेव्हां मी हामिल्टन नामक माझ्या मित्राला बरोबर घेऊन माझ्या खोलीकडे गेलों. हामिल्टन हा सतरा वर्षांचा होता, पण शरीरानें धष्टपुष्ट होता. माझ्यावर त्याची बरीच श्रद्धा होती. कदाचित् हातघाईवर प्रसंग आलाच, तर माझा चष्मा त्याच्या हातीं घावा, ह्मणून मी त्याला बरोबर घेतलें. मारामारींत मला केवळ चष्म्याचीच भीति होती. त्या दिवशीं त्या मजुरांनीं माझ्याशीं

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

कांहीं भांडण काढिलें नाहीं. आपापला खाना खाऊन ते गुपचुप निघून गेले. संध्याकाळीं पांच वाजल्यावर पुनः गिरणीला सुटी झाल्यावर मी माझें टपाल आणण्यासाठीं पोस्टऑफिसांत गेलों, तेव्हां कटांतील एका मजुरानें मला बजाविलें, कीं, “आज तयारींत रहावें, आह्मी येणार आहों.”

मी सांगितलें “फार चांगलें, अवश्य यावें.”

पोस्टऑफिसांतून परत येतांना मी वाटेंत माझ्या एका ह्याताच्या मजुर मित्राच्या घराकडे वळलों. तो घरीं नव्हता. मिस्टर जेकब येतांच त्याला माझ्याकडे पाठवावें, असें मी त्या घरच्या मालकिणीला सांगून आलों. खोलींत येऊन मी रोटी तयार करूं लागलों, इतक्यांत मि. जेकब आला. मी त्याचें स्वागत करून त्याला बसविलें आणि रोटी खाऊं लागलों. रोटी खातांखातां मी त्याच्याबरोबर गोष्टी बोलूं लागलों. मि. जेकब आल्यानंतर थोड्या वेळानें विरुद्ध टोळी आली. मि. जेकबला पाहतांच ती सर्व मंडळी बाहेर उभी राहिली. एका मजुरानें आंत येऊन मला सांगितलें, कीं, “आपणाला ते लोक बाहेर बोलावीत आहेत.” ‘आंत या असें त्यांनां सांग,’ असा मी धीरानें जबाब दिला. ते सारे धूर्त लोक आंत येऊन बसले. त्या टोळीचा पुढारी एक जर्मन होता. त्यानें मोठ्या प्रेमानें माझ्याशीं भाषण सुरू केलें, आणि तंड्याचें कारण विचारलें. मी त्याला थोडक्यांत सर्व हकीगत सांगितली. त्याचें समाधान झालें. त्यानें आमच्यामध्ये समेट करून दिल्यावर मंडळी उठून गेली.

मि. जेकब मला ह्मणाला “आपण निर्धास्त रहा. संयुक्त संस्थानांमध्ये कोणीहि मनुष्य कोणावर अत्याचार करूं शकत नाहीं. जर कोणी करील, तर त्याला शिक्षा होईल. या देशचा कायदा अमेरिकन लोकांप्रमाणेंच परदेशच्या लोकांचेहि संरक्षण करितो.”

यानंतर मि. जेकबहि घरीं निघून गेला. जेव्हां सर्व मंडळी परत आपल्या अड्ड्यावर गेली, तेव्हां तेथें दुसऱ्या लोकांनीं त्यांनां फार छडिलें, आणि ते त्यांनां ह्मणाले, कीं, “तुम्ही लोक फार नीच आणि भ्याड आहां, कारण एका मनुष्याविरुद्ध तुम्ही इतकेजण मिळून गेलां, त्याच्याशीं लढावयाचें होतें तर कोणी तरी एकद्वानेंच जावयाचें होतें.” मंडळी

चिनी व जपानी विद्यार्थी.

फार लज्जित झाली, आणि माझा सूड उगवावा असा मनांत निश्चय करून त्यांपैकी कांहीं जणांनीं रात्रीं दोन वाजण्याच्या सुमाराला माझ्या खोलीवर दगड फेंकिले. या दिवसांतच त्या कंपनीचा मालक यूजीन-हून आला होता. त्यानें जेव्हां तंत्र्याची सर्व हकीगत ऐकिली, तेव्हां त्यानें गिरणीच्या जमादाराला 'या सर्व धूर्त व लबाड लोकांनां काढून टाक,' असें सांगितलें. एकामागून एक त्या सर्व लोकांनां हांकलून देण्यांत आलें. गांवांतील लोकांनीं माझ्या वर्तनें एक सभा भरविली आणि त्या सभेंत वर सांगितलेल्या सर्व मजुरांचा त्यांनीं निषेध केला.

सांगण्याचें तात्पर्य हेंच, कीं, स्वावलंबी विद्यार्थ्यांनां अमेरिकन लोक फार साहाय्य करितात, आणि त्यांच्याशीं खरी सहानुभूति दाखवितात. समाजांतील लोक अशा विद्यार्थ्यांनां फार चाहतात आणि त्यांनां शक्य तितकें उत्तेजन देतात.

—
प्रकरण आठवें.

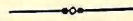
चिनी व जपानी विद्यार्थी.

हिंदी विद्यार्थ्यांशिवाय इतर देशांतील गरीब विद्यार्थीहि अमेरिकेला जातात, आणि ते निरनिराळ्या विश्वविद्यालयांत विद्या शिकतात. बहुतकरून चीन व जपान येथील विद्यार्थी सर्व विद्यालयांत जातात. हे सर्व विद्यार्थी स्वतःवर अवलंबून राहून विद्याभ्यास करितात. चिनी सरकार आपल्या विद्यार्थ्यांनां अमेरिकेंत पाठवितें; पण असे विद्यार्थी फार थोडे. जपानी विद्यार्थ्यांची बरीच मोठी संख्या अमेरिकेंत आहे. पॅसिफिक किनाऱ्यावर जपानी लोकांची बरीच वस्ति आहे. जपानी लोक एकमेकांला फार मदत करितात. आपले उद्देश पुरे करण्यासाठीं जपानी विद्यार्थी कोणतेंहि काम करण्याला तयार असतात. काम करण्याला ते यत्किंचित्हि घाबरत नाहींत. खाणावळी आणि दुकानें यांत बहुतेक जपानी मुलगे काम करितात. ते देशकालवर्तमान समजतात, हा त्यांच्यामध्ये मोठा गुण आहे. ते देशकालानुसार

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

वागतात. मनुष्यानें रूढींचा दास होऊं नये, हीच संसारांत यश मिळविण्याची गुरुकिल्ली आहे. आपल्या उद्देशाच्या सिद्धयर्थ हरएक स्वार्थत्याग करण्याला प्रत्येकानें तयार असलें पाहिजे. पण अशी कोणतीहि गोष्ट करूं नये, कीं, ज्या गोष्टीपासून आपला आत्मा निर्बल होईल. देशकालानुसार वागण्यांत आमचे विद्यार्थी फार मार्गें आहेत. अमेरिकेंत जाऊन ते अधिक कष्ट अनुभवितात, याचें कारण हेंच आहे. चिनी व जपानी विद्यार्थीप्रमाणें आमच्या लोकांनीं श्रमाची महती समजून घेणें, आणि खोटा अभिमान सोडून अहोरात्र देशसेवेला लागणें, ही फार महत्त्वाची गोष्ट आहे.

यूरोपांतील बहुतेक सर्व देशांतील विद्यार्थी अमेरिकन विश्वविद्यालयांत शिकतात. यूरोपांतील सर्व वर्ग मिळून अमेरिका बनलेली आहे; आणि तेथें प्रत्येक जातीचे लोक दिसून येतात हें जरी खरें आहे, तरी विद्येकरितांच ज्यांनीं आपलें घरदार सोडलें आहे, असे पुष्कळ विद्यार्थी अमेरिकन विश्वविद्यालयांत आढळतात. आपापल्या देशाच्या कल्याणासाठीं ते मेहनत व मजुरी करून विद्याध्ययन करितात.



प्रकरण नववें.

स्वावलंबनाचे गुण.

आतां स्वावलंबनाच्या तत्त्वाचा मनुष्यावर काय परिणाम होतो, हें पाहिलें पाहिजे. आरंभीं याचा थोडासा विचार केलेला आहे; परंतु येथें विस्तरशः विवेचन करणें इष्ट आहे. अमेरिकेंतील स्वावलंबी विद्यार्थी काय काय करितात, हें वाचकांनीं पाहिलें आहे. त्यांचे स्वावलंबनाचे मार्ग कोणते आहेत, हेंहि त्यांनां समजलें आहे. आतां स्वावलंबनतत्त्वाचे गुण समजणें कांहीं कठिण नाही.

पहिला गुण:—अमेरिकन लोकांवर या तत्त्वाचा इतका कांहीं परिणाम झालेला आहे, कीं, कितीहि बिकट काम करतांना ते यत्किंचित्हि डगमगत नाहींत. प्रत्येक बालक आणि बालिका यांनां आपल्या हक्कासाठीं यत्न करण्याची शक्ति असते. त्यांचा जर कोणी अन्याय

स्वावलंबनाचे गुण.

केला, तर निर्भयपणें आपला बचाव करण्याकरितां, स्वत्व राखण्याकरितां ते प्रयत्न करितात. भीरुता त्यांच्यापासून लांब पळून जाते. शरीर सशक्त आणि निरोगी ठेवण्यासाठीं ते नित्य व्यायाम करितात. शारीरिक बलाशिवाय आपल्या अधिकारांचें आणि हक्कांचें रक्षण मनुष्याला करतां येत नाहीं, हें ते जाणतात. मला ही गोष्ट अमेरिकेंत गेल्यावर चांगली समजली. आपल्या अधिकारांचें रक्षण ह्मणजे काय, हें आमच्या देशांतील लोकांनां माहीतसुद्धां नाहीं. जो मनुष्य सर्वांकडून मार खातो, सर्वांच्या हातापायां पडून सोडवून घेतो, त्याला मला मनुष्य समजतात; आणि जो भांडतो व मारामारी करतो त्याला, मोठा दंगेखोर समजतात. माझ्या आईबापांनीं लहानपणीं हीच गोष्ट मला शिकविली होती. पण अमेरिकेंत गेल्यावर मला कळलें, कीं, जो मनुष्य गुपचुप मार खातो, तो मोठा भित्रा व भ्याड होय. अशा मनुष्याचें जिणें व्यर्थ होय. प्रथम प्रथम मी दंडेली करण्याला फार भीत असें. जर कोणी मगरूर इसमानें शिव्या दिल्या, तर मी गप्प बसत असें. पण लवकरच मला समजलें, कीं, स्वस्थ बसणें हें भ्याडपणाचें निशाण आहे. नंतर जो कोणी मला त्रास देईल, त्याला मारल्याशिवाय राहूं नये, असा मीं निश्चय केला. दोनचार वेळां असा प्रसंग आला असतां मीं त्या त्या मजुरांना खूब मार दिला. नंतर ते माझा फार मान राखूं लागले. कारण, पाश्चात्य देशांत स्वत्वरक्षण करणारांचा फार गौरव होतो. त्यांनांच मनुष्य असें समजतात. अमेरिकेहून मी परत मॅचेस्टरला जातेवेळीं वाटेंत जहाजावर माझा व एका हबशीचा सामना जुंपला. तो हबशी मजुरांचा जमादार होता आणि आर्ही सर्व त्याच्या हाताखालीं काम करीत होतों. एके दिवशीं सकाळीं दहा वाजतां सर्व खलाशी खालचे गवताचे गट्टे बाहेर काढीत होते. तो हबशी खालीं होता आणि आर्ही सर्व वरच्या डेकवर गट्टे सांभाळीत होतों. मी एका बाजूला उभा होतों, बाकी मजूर दुसऱ्या बाजूला उभे होते. तो हबशी मला गुरकावून ह्मणाला “जा, तेथें जाऊन उभा रहा.”

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

“तूं आपलें काम सांभाळ—” मीं जोरानें उत्तर दिलें.

त्यावर रागावून त्यानें आपली मूठ दाखवून मला ह्मटलें “याला जाणतोस ना ?”

मींहि आपली मूठ दाखवून ह्मटलें “ही कांहीं कमी नाही !”

काळेभोर डोळे वटारून मला तो ह्मणाला “बरे, वर आल्यावर त्याचा निकाल होईल.”

“बरोच अच्छा !” असें ह्मणून मी आपल्या कामाला लागलों.

तो हबशी फार मजबूत खाटीक होता. आपलें काम संपवून वर आल्यावर मला पाहून तो ह्मणाला “मजबरोबर तूं लढशील काय ?”

मीं उत्तर दिलें, कीं, “तूं आणखी कांहीं बोलशील तर मी तुला मार देईन. मी तुला विलकूल भिणार नाही.”

तो जरा पुढें सरसावूं लागतांच, माझ्या साथीदार अमेरिकन मजुरांनीं त्याला हिडसावून ह्मटलें “खबरदार पुढें पाऊल टाकशील तर ! आह्मी सर्व मिळून तुला चोप देऊं.”

तो आपलें तोंड खालीं करून मार्गें हटला आणि त्या दिवसापासून माझ्याशीं चांगल्या रीतीनें वागूं लागला. मीं जर घाबरून गेलों असतो, तर त्याच्याकडून मीं मार खाल्ला असता, आणि अमेरिकन मजुरांनीं मला कमी लेखिलें असतें. यासाठीं स्वत्वक्षेचें महत्त्व मनुष्यानें जाणलें पाहिजे. स्वत्वक्षेचें तत्व पाळतांना आपल्याहून जबरदस्त अशा मनुष्याशीं जरी सामना करावा लागला, तरी यत्किंचित्ही घाबरूं नये. स्वाभिमान हा मनुष्याचें एक भूषण आहे. तो नसला ह्मणजे मनुष्याचें मनुष्यपण नष्ट होतें, आणि मग प्रत्येकजण त्याला पायांखालीं तुडवितो. लहानपणापासून मुलांनां असे संस्कार झाले पाहिजेत, कीं, त्यांनीं स्वतः कठिण प्रसंगांशीं टक्कर देऊन त्यांनां दूर करण्यास शिकावें. स्वतःवर अवलंबून राहण्याची संवय बालपणापासून असली, कठिण प्रसंग स्वतःच बालपणापासून निस्तरावे लागले, ह्मणजे त्यांनां स्वत्व-रक्षण व शरीररक्षण यांचें महत्त्व आपोआप समजतें. लहानपणापासून जे दुसऱ्यावर अवलंबून रहातात, त्यांचें अंग बळकट होत नाही, त्यांचें

स्वावलंबनाचे गुण.

आत्मिक बल वाढत नाही, उलट ते भित्रे होतात. याकरितां माणुस-पणाचे गुण अंगीं घेण्यासाठीं स्वावलंबनाचा धडा लहानपणापासून शिकविला पाहिजे.

दुसरा गुण:—नेपोलियन बोनापार्ट हा इटाली देशावर स्वारी करणार होता. स्वित्झर्लंडच्या रस्यानें जावें तर वाटेंत आप्स पर्वत आड येतो, असें त्याच्या सरदारांनीं सांगितलें. त्या वीर पुरुषानें उत्तर दिलें “आप्स पर्वत असो किंवा कांहीं असो, मला इटालीस अवश्य गेलें पाहिजे !” नेपोलियनचा स्वतःवर भारी विश्वास होता. कितीहि विकट काम असलें तरी तें करतांना तो अडथळ्यांनां बिलकूल जुमानित नसे. अशीं उदाहरणें जगाच्या इतिहासांत पुष्कळ मिळतात. ज्या मनुष्याचें जीवित सफल किंवा यशस्वी झालें आहे, त्याचा मोठा गुण ह्मणजे त्यांचा आत्मविश्वास होय. जे लोक स्वावलंबनाच्या तत्त्वाप्रमाणें वागतात, त्या लोकांमध्येच हा गुण येतो. आमचें जीवित एक संग्राम किंवा युद्ध आहे. ज्यानें आरंभापासून युद्धाचें शिक्षण घेतलें आहे, असाच मनुष्य या जीवनसंग्रामांत वीर व योद्धा होऊं शकतो. आरंभापासून तसा अभ्यास केल्यानें मनुष्यामध्ये आत्मविश्वासाची वाढ होते. आपली योग्यता व अयोग्यता त्याला नीट समजते. कठिण प्रसंगांनां कसें तोंड द्यावें हें त्याला चांगलें समजते.

याच्या उलट जे लोक जीवित हें एक संग्राम आहे असें समजत नाहीत, आणि ज्यांनीं युद्धाचा-दंडेलीचा कधींच अभ्यास केला नाही, ते लोक थोडासा प्रतिकूल प्रसंग आला असतां थरथर कांपूं लागतात, आणि युद्धाचा प्रसंग आला ह्मणजे त्यांचा स्वतःवर विश्वास नसतो. याचा परिणाम असा होतो, कीं, त्यांनां संसाराच्या कोणत्याहि कामांत यश मिळत नाही. ते आपलीं कामें लबाडी, आर्जव किंवा खुशामत इत्यादि असत्कर्मांच्या द्वारा करून घेतात. असे लोक ज्या समाजांत किंवा देशांत असतात, तो समाज किंवा देश पतित होय. याकरितां अमेरिकन लोकांप्रमाणें आह्मीं आमच्या मुलांमुलींनां स्वावलंबनाचें शिक्षण दिलें पाहिजे, ह्मणजे तीं पुढें मोठमोठीं कामें करण्यांत माघार घेणार नाहीत. त्यांचा स्वतःवर विश्वास असला, ह्मणजे कोणतीहि गोष्ट

अमेरिकेंतील गरीब विद्यार्थी.

त्यांना असंभवनीय वाटणार नाही. जातीच्या किंवा समाजाच्या उन्नतीला या गुणाची फार आवश्यकता आहे, हें निःसंशय होय.

तिसरा गुण:—स्वावलंबनाचा तिसरा गुण असा आहे, कीं, तो मनुष्याला कर्मवीर बनवितो. तो मनुष्याला असें अंतःसामर्थ्य देतो, कीं, त्यायोगें थोड्याशा उपकरणांनीं भारी कामें करण्याला तो भीत नाही. इंग्रज लोकांनीं याच गुणाचा आश्रय करून हिंदुस्तानाशीं पूर्वी व्यापार सुरू केला. या गुणापासून त्यांनां काय काय लाभ झाले हें इतिहास वाचणारांनां सांगावयाला नको. मोठमोठ्या कंपन्या स्थापन करणें, आणि त्या चांगल्या रीतीनें आणि यशस्वीपणानें चालविणें, हें काम कर्मवीरत्व धारण केल्याशिवाय होऊं शकत नाही. दुसऱ्यांच्या तोंडाकडे पहाणारांचे विचार फार संकुचित होतात. त्यांनां पुढचा पेंचपाच कळत नाही. त्यांची दृष्टि कोती व संकुचित होते. त्यांनां आयुष्यांत कोणतीहि महत्त्वाकांक्षा असत नाही. हिंदुस्तानचे लोक आज सर्व लोकांच्या मार्गे आहेत याचें कारण, त्यांनीं आपल्या जीविताचें उच्च ध्येय कांहीं ठरविलेलें नसतें. ते केवळ आपल्या आयुष्याचे दिवस कसेतरी काढीत असतात. जें कांहीं थोडें त्यांनां मिळतें, त्यांत ते आपला निर्वाह करून स्वतःला धन्य समजतात. त्यांची अशी एक आवडती ह्मण आहे, कीं, 'घरकी आधी बाहेरकी सारी कुळ नहीं' (घरची अर्धी बरी, पण बाहेरची सगळी नको!) आपल्या गांवाहून पन्नाससाठ मैल दूर जाणें ह्मणजे परदेशगमन होय, असें ते समजतात. आह्मी स्वावलंबनाच्या तत्त्वाप्रमाणें वागत नाही, हेंच आमच्या अशा संकुचितवृत्तीचें कारण आहे. जगांतील उन्नत लोक मोठ्या वेगानें पुढें चालले आहेत. आज अमेरिकेचे बालक आणि बालिका देशदेशान्तरांत फिरत आहेत, आणि त्यांच्या महत्त्वाकांक्षा दुसऱ्या कोणत्याहि लोकांच्या महत्त्वाकांक्षेहून कमी नाहीत. अमेरिकन लोक वैभवाच्या शिखराला चढलेले आहेत याचें कारण हेंच आहे. पन्नास वर्षांपूर्वी अमेरिकेचा व्यापार साधारण होता. आज अमेरिकेच्या वस्तु खपत नाहीत असा जगांत कोणताहि भाग नाही. अमेरिकेंतील

मोठमोठ्या धनिकांनी आपल्या हिंमतीने धन मिळविले आहे. कार्नेजी हा गरीब आईबापांचा मुलगा होता. मोलमजुरी करून व संतोष आणि धैर्य यांचा आश्रय करून क्रमाक्रमाने त्याने आपल्या इच्छा पुऱ्या करून घेतल्या. त्याचे चरित्र स्वावलंबनाचे एक जीवंत उदाहरण आहे.

चौथा गुण:—ईश्वराने मनुष्याला भिन्नभिन्न प्रकारच्या शक्ति दिलेल्या आहेत. मनुष्य स्वतंत्र व स्वच्छंद होऊन स्वावलंबन करू लागला, ह्मणजे त्या शक्तींचा विकास होतो. दुसऱ्यांवर अवलंबून राहणारे लोक आपल्या सद्गुणांचा, शक्तींचा उपयोग करण्याला शिकत नाहीत; कारण तसे करण्याला त्यांना प्रसंग किंवा संधि मिळत नाहीत. त्यांच्यामध्ये गुप्त असलेल्या शक्ति निरुपयोगी होतात. आपल्या प्रत्येक कामांत ते दुसऱ्यांची मदत घेतात. अशा प्रकारची संवय त्यांना फार हानिकारक होते. जर ते स्वतंत्रपणे स्वतःवर अवलंबून राहून आपले आयुष्य कांठितील, तर त्यांच्या जीविताचे सार्थक्य होईल. अमेरिकेत आज जे अश्रुतपूर्व शोध लागत आहेत, त्याचे कारण असे आहे, की, तेथील विद्यार्थी आपले काम स्वतंत्र बाण्याने करीत असतात. प्रकृतिदत्त गुणांचा तेथे अप्रतिहत विकास होत असल्यामुळे अमेरिका नित्य नूतन फळे देत आहे. आपल्या देशाकारितां, आपल्या लोकाकारितां अमेरिकन लोक नवीननवीन यंत्रे तयार करीत आहेत, आणि त्यायोगे हे 'पाताल'वासी लोक धनधान्यसंपन्न होत आहेत. यावरून स्वावलंबनाचा चौथा गुण असा दिसून येतो, की, तो पालन करणाऱ्या मनुष्याच्या प्रकृतिदत्त गुणांचा विकास करतो.

वाचकांना अमेरिकेच्या उन्नतीचे कारण समजावे ह्मणून वर सांगितलेल्या गुणांचे थोडेसे वर्णन आम्ही दिले आहे. अमेरिकेचे लोक मजुरीचे महत्त्व जाणतात; आणि ज्या मानाने मनुष्य योग्य असेल, त्या मानाने त्याला अधिकार देण्याला ते तयार असतात. लांकूड कापणारा, गरीब आईबापांचा मुलगा अब्राहाम लिंकन अमेरिकेचा प्रेसिडेंट झाला. लांकूडविक्या गरीब ग्रांट आपल्या वीरप्रभावाने अमेरिकेचा तत्काधिपति झाला. गारफील्ड हा गरीब आईबापांचा पुत्र होता. स्वावलंबनाच्या मार्गाने जाऊन तोही आपल्या देशाचा पुढारी झाला.

अमेरिकेतील गरीब विद्यार्थी. वापरा

प्रत्येक शक्तीचा विकास होण्याची संधि जेथे मिळते, अशा अमेरिकेत या सर्व गोष्टी होऊ शकतात. जोंपर्यंत अमेरिकन लोक स्वावलंबनाच्या तत्त्वाप्रमाणे वागत राहतील, तोंपर्यंत त्या देशाची उन्नतिच होत राहील. ईश्वर न्यायी आहे. त्याला कोणत्याहि देशाचा किंवा जातीचा पक्षपात नाही. कोणीहि त्याचे आवडतेनावडते नाहीत. सर्वांवर त्याचें प्रेम सारखें आहे. जे ईश्वराच्या आज्ञेप्रमाणे वागतात त्यांची नेहमी उन्नति होते. जे त्याची आज्ञा पाळीत नाहीत त्यांना दुष्काळ, प्लेग इत्यादि घेरून टाकतात. ग ८

हिंदी तरुणांनो! या, आपण अमेरिकेच्या गरीब विद्यार्थ्यांपासून कांहीं धडा घेऊं या! ते आह्मांला असा पवित्र संदेश देत आहेत, कीं, मजुरीनें कोणीहि मनुष्य नीच होत नाही. इतर सम्य गृहस्थाला जो अधिकार किंवा हक्क समाजांत आहे, तोच अधिकार किंवा हक्क मोलमजुरी करणारालाहि आहे. अमेरिकेचे गरीब विद्यार्थी आह्मांला असें सांगतात, कीं, मजुरी कोणत्याहि प्रकारची कां असेना, ती इमानें इतवारें करणारा केव्हांहि कमी किंवा पतित होत नाही. इतकेंच नव्हे, तर आपल्या शरीराच्या अवयवांचा यथायोग्य उपयोग करून जो आपला उदरनिर्वाह करतो, तोच परमात्म्याचा खरा पुत्र होय! मजुरी करणारांला आह्मी केव्हांहि कमी गणणार नाहीं, इतकेंच नव्हे, तर सदा त्यांचा सन्मान करून त्यांच्या शिक्षणाची कांहीं तरी सोय आह्मी करूं, असा आह्मीं आजपासून निश्चय केला पाहिजे.

परमात्म्याची आह्मी हात जोडून अशी प्रार्थना करितों, कीं, त्यानें आमच्या विद्यार्थ्यांना आत्मिक बल द्यावें, ह्मणजे ते स्वावलंबनाचा धडा शिकतील, श्रमाची महती समजून ते देशाचे व्यवसाय वाढवतील, आणि ज्या कांहीं वाईट गोष्टी देशांत प्रचलित झाल्या आहेत, त्या दूर करण्यालां ते यत्किंचित्हि भिणार नाहीत.

श्री सौ गं. पं.

वाचनालय, भोर

४८

2 JAN 1985

मनोरंजक ग्रंथप्रसारक मंडळी, गिरगांव-मुंबई.

५७ वें, रा. व. वारद.	०-४-०	६५ वें, श्रीरामकृष्ण.	१-४-०
५८ वें, भ्रमनिरसन.	०-६-०	६६ वें आत्मोद्धार.	१-०-०
५९ वें, वकुलमाला.	०-१२-०	६७ वें, केवळ स्वार्थापार्यां.	१-४-०
६० वें, बोधपर व्याख्यानें.	१-०-०	६८ वें, रामतीर्थ, भाग२ रा.	१-४-०
६१ वें, विचारविलसित.	०-८-०	६९ वें, नाटक्याचे तारे.	०-१२-०
६२ वें, पन्नास वर्षांनीं.	१-४-०	७० वें, गरीब विचारी यमुना	०-६-०
६३ वें, डॉ. आनंदीबाई.	१-४-०	७१ वें, बुद्धलीलासारसंग्रह.	१-४-०
६४ वें, रामकृष्णबोधवचनें.	०-८-०	७२ वें, अमेरिकेंतील विद्यार्थी	०-४-०

मासिक मनोरंजनाचीं मागील वर्षांचीं पुस्तके.

१ लें,	शिल्लक नाही.	११ वें,	शिल्लक नाही.
२ रें,	"	१२ वें,	१-४-०
३ रें,	"	१३ वें, (पूर्वार्ध.)	०-१२-०
४ थें,	"	१४ वें,	१-८-०
५ वें,	०-१२-०	१५ वें, (उत्तरार्ध.)	०-१२-०
६ वें,	शिल्लक नाही.	१६ वें,	१-८-०
७ वें,	"	१७ वें,	३-०-०
८ वें,	०-१२-०	१८ वें,	३-०-०
९ वें,	०-१२-०	१९ वें,	३-८-०
१० वें,			

मनोरंजनाचे दिवाळी-दरवार-वसंतचे अंक.

१ ला,	१-०-०	३ रा,	१-०-०
२ रा,	१-०-०	४ था,	१-०-०
		५ वा	१-०-०

महाराष्ट्रमहिलेचीं पुस्तके.

१ वर्ष २ रें	०-१२-०	वर्ष ३ रें	०-१२-०
--------------	--------	------------	--------

मनोरंजक ग्रंथप्रसारक मंडळी, गिरगांव-मुंबई.

20 NOV 2013

11 JAN 1996

मनोरंजन छापखाना

चर्नीरोड, गिरगांव-मुंबई.

विहिजिटिंगकार्ड, पोस्टकार्ड, नोटपेपर, लेटरपेपर, इन्विटेशनकार्ड, निमंत्रणपत्रिका, कॅटलॉग, प्रास्पेक्टस, इ. इ. इ. सर्व प्रकारचें मराठी आणि इंग्रजी जॉववर्क, त्याचप्रमाणें सर्व प्रकारचें मराठी आणि इंग्रजी बुकवर्क, त्याचप्रमाणें चित्रांचें सर्व प्रकारचें काम, अतिशय सुंदर आणि अति-त्वरेनें करण्यांत येईल.

स्वस्तपणा हें मनोरंजन छापखान्याचें ध्येय नाही. सुंदर, मोहक, सुवक, शुद्ध आणि अतित्वारित अशा कामांची अपेक्षा करणारांनीं आपलीं कामें मनोरंजन छापखान्याकडून माफक दरानें करवून घेऊन मनोरंजनाच्या साहसाला अभिमानपूर्वक उत्तेजन देण्याची कृपा करावी, अशी विनंति आहे.

काशीनाथ रघुनाथ मित्र.